G20 भारत 2023 INDIA

आज़ादी का अमृत महोत्सव

बीओआई वार्ता

बैंक ऑफ़ इंडिया की तिमाही हिंदी गृहपत्रिका

सितंबर, 2023

मेरी माटी मेरा देश

स्टार राजभाषा कलश

बैंक ऑफ़ इंडिया

रिश्तों की जमापूँजी

प्रधान कार्यालय
हिन्दी दिवस समारोह 2023

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के दिशानिर्देशों के अनुपालन में बैंक ऑफ इंडिया में हिन्दी माह 2023 का आयोजन प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री रजनीश कर्नाटक और कार्यपालक निदेशकगण श्री पी.आर. राजगोपाल, श्री स्वरूप दासगुप्ता, श्री एम. कार्तिकेयन और श्री सुब्रत कुमार की उपस्थिति में किया गया।

हिन्दी माह के दौरान "सुलेख प्रतियोगिता", "हिन्दी टंकण प्रतियोगिता", "ऑनलाइन राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता-स्केल IV से VIII", "कहानी समीक्षा प्रतियोगिता", "बैंक उत्पाद एवं राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता", "अधूरी कहानी पूरी करें", "समाचार वाचन प्रतियोगिता", "अनुवाद एवं शब्दावली ज्ञान प्रतियोगिता" और "गीत गायन प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया। बैंक की विदेश स्थित शाखाओं में कार्यरत स्टाफ सदस्यों के लिए 'संस्मरण प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया। प्रधान कार्यालय में सर्वश्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन हेतु सुरक्षा विभाग, अनुपालन विभाग और बोर्ड सचिवालय को पुरस्कृत किया गया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में राजभाषा विभाग के महाप्रबंधक श्री प्रमोद कुमार द्विवेदी ने सबका स्वागत किया और कार्यक्रम का संचालन सुश्री मऊ मैत्रा, सहायक महाप्रबंधक ने किया। इस अवसर पर बैंक के सभी मुख्य महाप्रबंधक, सभी महाप्रबंधक एवं वरिष्ठ अधिकारी तथा स्टाफ सदस्य बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

संरक्षक

श्री सुब्रत कुमार

कार्यपालक निदेशक

मार्गदर्शक

श्री अभिजीत बोस

मुख्य महाप्रबंधक

प्रधान संपादक

श्री प्रमोद कुमार द्विवेदी

महाप्रबंधक

उप प्रधान संपादक

सुश्री मऊ मैत्रा

सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल

श्री एस चंद्रशेखर, मुख्य प्रबंधक

श्री पुनीत सिन्हा, मुख्य प्रबंधक

डॉ. पीयूष राज, मुख्य प्रबंधक

श्री निरंजन कुमार सामरिया, वरिष्ठ प्रबंधक

यह आवश्यक नहीं कि पत्रिका में छपे लेखों में व्यक्त विचार बैंक के हों।

प्रधान संपादक,
बैंक ऑफ़ इंडिया, प्रधान कार्यालय,
राजभाषा विभाग, स्टार हाउस, जी-5, जी ब्लॉक,
बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स, बांद्रा (पूर्व)
मुंबई - 400 051

विषय-सूची

सार्वजनिक हित प्रकटीकरण और सूचना प्रदाता संरक्षण संकल्प, 2004 (पिडपी) शिकायत	**06**
ग्राहक सेवा - बैंकिंग का आधार	**08**
एक यात्रा-वृतांत ऐसा भी	**11**
जमी बर्फ	**14**
शिक्षा मिटाए गरीबी का अंधकार	**16**
क्या तुम हो भगवान??	**18**
सर पर हाथ	**22**
उम्मीद	**23**
समय की चाहत	**25**
बैंक ऑफ इंडिया परिवार के संग 25 वर्षों की रिश्तों की जमापूंजी	**32**
हिंदी माह 2022	**38**

बीओआई वार्ता के इस अंक का कवर पृष्ठ: हिन्दी दिवस के अवसर पर आयोजित तृतीय अखिल भारतीय सम्मेलन में हमारे बैंक द्वारा लगाए स्टाल में **"मेरी माटी मेरा देश"** की तर्ज पर कलश रखा गया था। इस कलश के लिए देश के कोने-कोने से आए हमारे बैंक के राजभाषा अधिकारी अपने साथ अपने-अपने प्रांत की मिट्टी लेकर आए थे। सम्मेलन में पधारे विशिष्ट अतिथियों जैसे माननीय गृह राज्य मंत्री अजय कुमार मिश्र, केरल राज्य के राज्यपाल महामहीम मो. आरिफ़ खान, राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय की सचिव सुश्री अंशुली आर्या, हमारे बैंक के कार्यपालक निदेशक श्री सुब्रत कुमार एवं अन्य बैंकों के कार्यपालकगणों सहित विभिन्न गणमान्य अतिथियों ने कलश में मिट्टी समर्पित की। तदोपरांत प्रधान कार्यालय में हिन्दी माह समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर कार्यपालक निदेशक श्री सुब्रत कुमार जी ने हमारे बैंक के माननीय एमडी एवं सीईओ श्री रजनीश कर्नाटक जी को यह कलश सादर भेंट किया एवं प्रधान कार्यालय के प्रांगण में पौधारोपण करके "मेरी माटी मेरा देश" की अवधारणा के साथ 'स्टार राजभाषा कलश' का उद्देश्य चरितार्थ हुआ।

कार्यपालक निदेशक का संदेश

प्रिय साथियो,

"बीओआई वार्ता" के माध्यम से आपसे पुनः संवाद करना मेरे लिए अत्यधिक हर्ष का विषय है। यह तिमाही राजभाषा हिन्दी में कामकाज की दृष्टि से महत्वपूर्ण रही है। हमारे बैंक ने अपने सभी कार्यालयों एवं शाखाओं में हिन्दी माह के दौरान विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया। इस बार राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय ने 14 एवं 15 सितंबर को तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन पुणे में किया। इस सम्मेलन में हमारे बैंक ने अपने स्टाल के माध्यम से 'मेरी माटी मेरा देश' की तर्ज़ पर "राजभाषा कलश" का सफल आयोजन किया। सम्मेलन में पधारे भारत सरकार के सभी सम्मानित प्रतिनिधियों ने हमारे स्टाफ सदस्यों द्वारा देश के कोने-कोने से लाई गई मिट्टी को कलश में समर्पित किया और इसे एक अभूतपूर्व पहल बताया। इस कलश को हिन्दी माह के समापन समारोह में हमने हमारे बैंक के माननीय एमडी एवं सीईओ श्री रजनीश कर्नाटक को सौंपा गया और प्रधान कार्यालय के प्रांगण में उस मिट्टी में पौधारोपण किया गया। राजभाषा कलश की विचारधारा को चरितार्थ करते हुए इस पत्रिका में भी देशभर के सभी प्रान्तों, भाषाओं एवं संस्कृतियों को जीने वाले स्टाफ सदस्यों द्वारा भेजे गए लेख समाहित करके "बीओआई वार्ता" रूपी एक सूत्र में पिरोकर उन्हें देश के कोने-कोने में स्थित शाखाओं में कार्य करने वाले स्टाफ सदस्यों को प्रेषित किया जाता है।

बैंकिंग कारोबार की दृष्टि से भी इस वर्ष की दूसरी तिमाही हमारे लिए अभूतपूर्व रही है। हमने न केवल कारोबार-मिक्स के उच्चतम आंकड़ों को छुआ है, अपितु लाभप्रदता एवं आस्ति गुणवत्ता में भी उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन का उदाहरण प्रस्तुत किया है। देश भर में उत्कृष्ट बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध करवाने में हमारा बैंक हमेशा से ध्वजवाहक रहा है। हम देश की सभी प्रमुख भाषाओं में अपनी सेवाएं उपलब्ध करवा रहें हैं। यही कारण है कि हमारा ग्राहक हमारे बैंक ऑफ इंडिया के बैनर तले अपनत्व की अनुभूति को महसूस करता है। भाषा न केवल भावों की अभिव्यक्ति को सार्थक बनाती है बल्कि यह भावनाओं में भी प्राण फूंकने का काम करती है। इसलिए ग्राहकों से संवाद करते हुए, हमें हमेशा अपनी भाषा की गुणवत्ता के स्तर को बनाए रखना जरूरी है। आज विकट प्रतियोगिता के इस युग में बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध करवाने वाले संस्थानों की भरमार है इसलिए यदि हमें अपनी प्रासंगिकता को बनाएँ रखना है तो उत्कृष्ट सेवाओं के साथ-साथ ग्राहक को आकर्षित करने वाले भाषिक आचरण को अपनाना होगा, तभी हम अपने प्रतिद्वंदियों से पार पा सकेंगे।

आगामी त्योहारों की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ...

भवदीय,

सुब्रत कुमार

(सुब्रत कुमार)

प्रधान संपादक की कलम से

साथियो,

बैंक की हिन्दी गृह पत्रिका "बीओआई वार्ता" के इस अंक को आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यधिक हर्ष हो रहा है। इस पत्रिका के माध्यम से हम दुनिया भर में हमारे बैंक की शाखाओं और कार्यालयों के स्टाफ सदस्यों को हिन्दी में बैंकिंग पर समसामयिक साहित्य का सृजन करने एवं पढ़ने के माध्यम से 'रिश्तों की जमपूंजी' के एकसूत्र में बांध कर रखने की कोशिश करते हैं। बैंक की अनेक गतिविधियों, स्टाफ सदस्यों के अनुभवों एवं विचारों को साझा मंच प्रदान करते हुए "बीओआई वार्ता" राजभाषा हिन्दी की एक गृह पत्रिका के दायित्वों को निभाने का प्रयास बखूबी कर रही है। राजभाषा के लिहाज से वित्तीय वर्ष की दूसरी तिमाही हमेशा बहुत महत्वपूर्ण होती है। इस दौरान हिन्दी माह एवं हिन्दी दिवस का आयोजन अखिल भारत के स्तर पर किया गया है। इस अंक में हिन्दी माह के दौरान आयोजित हुई गतिविधियों को स्थान दिए जाने के साथ-साथ, इस दौरान सृजित हुए उत्कृष्ट विचारों, अनुभवों एवं साहित्य को भी इसमें समाहित किया गया है। हमारा शीर्षस्थ प्रबंधन बैंक द्वारा सृजित साहित्य में विशेष रुचि लेकर उसका अध्ययन करता है एवं बेहतर कार्यनिष्पादन के लिए अपने सुझावों के माध्यम से हमारा निरंतर मार्गदर्शन करता है। हमारे लिए यह गर्व की बात है कि माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी ने पिछले अंक के अवलोकन पर अपने सुझाव साझा किए थे, जिन पर अमल करते हुए इस अंक में हमने कुछ नए प्रयोग किए गए हैं। इस अंक में 25 वर्षों से अधिक बैंक में अपनी सेवाएं दे चुके कार्यपालकगणों के विवरण छापने एवं प्रधान कार्यालय के विभागों के बारे में जानकारी साझा करने का प्रयास किया गया है।

इस बार हिन्दी दिवस के अवसर पर माननीय गृह मंत्री जी ने अपने संदेश में अंग्रेजी भाषा की तुलना में भारतीय भाषाओं के उपयोग को अधिक महत्व देते हुए मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति पर बल दिया है। हिन्दी भाषा की जनतांत्रिक प्रवृत्ति को उजागर करते हुए उन्होंने इसे हमारे देश की भाषिक विविधता को एकता के सूत्र में पिरोने वाला धागा बताया है। मैं आप सभी से अनुरोध करता हूँ कि आप अपने प्रांत, भाषा, संस्कृति एवं धरोहर से संबंधित लेख, कविताएं, लघु कथाएं, संस्मरण आदि का सृजन करें और "बीओआई वार्ता" के माध्यम से उन्हें साझा करते हुए अन्य साथियों के लिए भी प्रेरणास्त्रोत बनें। आपसे अधिकाधिक कृतियाँ प्राप्त होने से हमारी संपादकीय टीम के मनोबल में वृद्धि होती है और हम एक उत्कृष्ट एवं समृद्ध पत्रिका आपको समर्पित कर पाने में सक्षम होते हैं।

शुभकामनाओं के साथ....

भवदीय,

(प्रमोद कुमार द्विवेदी)

अपने विभाग को जानिए:

सतर्कता विभाग

बैंक ऑफ इंडिया में एक सतर्कता विभाग कार्यरत है। विभाग के प्रमुख मुख्य सतर्कता अधिकारी हैं जिनका चयन भारत सरकार द्वारा बैंक के लिए किया जाता है। सतर्कता विभाग द्वारा विशेषज्ञ अन्वेषण अधिकारियों द्वारा की गई जांच की निगरानी की जाती है। इसके साथ ही निलंबन के मामलों को देखना, चार्ज शीट/ एफ़आईआर के मसौदे तैयार करना, सतर्कता पर सामान्य नीतिगत मामलों की निगरानी जैसे कार्य का उत्तरदायित्व विभाग के पास है। हमारे बैंक द्वारा प्रायोजित 3 क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों के सतर्कता मामलों की प्रोसेसिंग विभाग द्वारा की जाती है। भारत सरकार, सीवीसी, डीएफ़एस और सीबीआई आदि से प्राप्त सतर्कता मामलों, शिकायतों आदि पर उचित कार्रवाई करने का दायित्व भी सतर्कता विभाग का है। विभाग द्वारा ऑनलाइन सतर्कता मॉड्यूल की निगरानी की जाती है। इस वर्ष बैंक के सतर्कता विभाग में संरचनात्मक परिवर्तन लाए गए हैं जिसके तहत सभी अंचलों में एक सतर्कता अधिकारी की तैनाती की गई है तथा प्रधान कार्यालय के सतर्कता विभाग को सशक्त किया गया है। सतर्कता विभाग द्वारा प्रति वर्ष भारत सरकार के दिशानिर्देशों के अनुसार सतर्कता जागरूकता सप्ताह/माह का आयोजन किया जाता है। विभाग द्वारा प्रति सप्ताह बैंक के विभिन्न नियमों के अनुपालन के संबंध में अलर्ट भेजा जाता हैं ।

सार्वजनिक हित प्रकटीकरण और सूचना प्रदाता संरक्षण संकल्प, 2004 (पिडपी) शिकायत

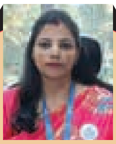

अम्बिका चतुर्वेदी
सहायक महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
सतर्कता विभाग

प्रत्येक वर्ष सरदार वल्लभ भाई पटेल का जन्म दिवस 31 अक्टूबर, सतर्कता जागरूकता सप्ताह के रूप में मनाया जाता है। इस वर्ष केन्द्रीय सतर्कता आयोग ने सार्वजनिक हित प्रकटीकरण और सूचना प्रदाता संरक्षण संकल्प (पिडपी) को प्रचार हेतु एक मुख्य बिन्दु बनाया है। पिडपी भारत सरकार का एक संकल्प है जिसके अंतर्गत की गयी समस्त भ्रष्टाचार संबंधी शिकायतों और शिकायतकर्ताओं की पहचान गोपनीय रखी जाती हैं। केन्द्रीय सतर्कता आयोग के दिशानिर्देनुसार, मुख्य कार्यालय के सतर्कता विभाग द्वारा पीआईडीपीआई (पिडपी) जागरूकता हेतु विभिन्न आंचलिक कार्यालयों, एनबीजी कार्यालयों तथा शाखाओं में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है।

1.1 पिडपी समाधान के तहत प्राप्त शिकायतों का निपटान

1.1.1 शिकायतकर्ता की पहचान गुप्त रखने की जिम्मेदारी आयोग की है। इसलिए आयोग द्वारा सार्वजनिक सूचना जारी की गई जिसमें आम जनता को सूचित किया गया कि इस संकल्प के तहत की जाने वाली किसी भी शिकायत हेतु निम्नलिखित शर्तों का पालन किया जाना चाहिए: -

i. शिकायत एक सुरक्षित लिफाफे में होनी चाहिए।

ii. (क) लिफाफे को सचिव, केंद्रीय सतर्कता आयोग को संबोधित किया जाना चाहिए और उस पर "सार्वजनिक हित प्रकटीकरण के तहत शिकायत" लिखा होना चाहिए । यदि लिफाफा सुरक्षित और बंद नहीं है तो आयोग के लिए उपरोक्त संकल्प के तहत शिकायतकर्ता की रक्षा करना संभव नहीं होगा और शिकायत को आयोग की सामान्य शिकायत प्रबंधन नीति के अनुसार निपटाया जाएगा। शिकायतकर्ता को अपना नाम और

पता शिकायत के आरंभ या अंत में या संलग्न पत्र में देना होगा।

सीवीसी के साथ-साथ सीवीओ को संबोधित कोई भी शिकायत भेजते समय लिफाफे के बाहर "सार्वजनिक हित प्रकटीकरण के तहत शिकायत" या "पीआईडीपीआई शिकायत" लिखकर पोस्ट किया जा सकता है, जिसे पोस्टिंग पंजीकरण और स्पीड पोस्ट सेवा के लिए स्वीकार किया जा सकता है। प्रेषक के मोबाइल नंबर और ईमेल पते सहित नाम और पूरे पते के बिना-

i) आयोग गुमनाम/छद्मनाम शिकायतों पर विचार नहीं करेगा।

ii) शिकायत का पाठ सावधानीपूर्वक तैयार किया जाना चाहिए ताकि शिकायतकर्ता की पहचान के बारे में कोई विवरण या सुराग न मिले। तथापि, शिकायत का विवरण विशिष्ट और सत्यापन योग्य होना चाहिए।

iii) व्यक्ति की पहचान की रक्षा के लिए आयोग कोई पावती जारी नहीं करेगा और शिकायतकर्ता को सलाह दी जाती है कि वे अपने हित में आयोग के साथ कोई और पत्राचार न करें। आयोग आश्वासन देता है कि मामले के तथ्यों के सत्यापन योग्य होने पर वह आवश्यक कार्रवाई करेगा, जैसा कि ऊपर उल्लिखित भारत सरकार के संकल्प के तहत प्रदान किया गया है। नामित एजेंसी, यदि उचित समझे, खुलासा करने वाले व्यक्तियों से अतिरिक्त जानकारी या विवरण मांग सकती है। यदि शिकायत गुमनाम है, तो नामित एजेंसी मामले में कोई कार्रवाई नहीं करेगी।

iv) आयोग इस संकल्प के तहत प्रेरित/परेशान करने वाली शिकायतें करने वाले शिकायतकर्ताओं के खिलाफ भी कार्रवाई कर सकता है।

1.2 पीआईडीपीआई के अंतर्गत सूचना प्रदाता को सुरक्षा

पीआईडीपीआई संकल्प के अनुसार, व्हिसल ब्लोअर्स की सुरक्षा के लिए निम्नलिखित प्रावधान किए गए हैं:-

i. यदि कोई व्यक्ति इस आधार पर किसी कार्रवाई से व्यथित है कि उसे इस तथ्य के कारण पीड़ित किया जा रहा है कि उसने शिकायत दर्ज की है या खुलासा किया है, तो वह मामले के निवारण के लिए नामित एजेंसी (सीवीसी) के समक्ष एक आवेदन दायर कर सकता है जो उचित समझे जाने पर ऐसी कार्रवाई करेगा। नामित एजेंसी, जैसा भी मामला हो, संबंधित लोक सेवक या सार्वजनिक प्राधिकरण को उचित निर्देश दे सकती है।

ii. शिकायतकर्ता के आवेदन पर, या एकत्रित जानकारी के आधार पर, यदि नामित एजेंसी की यह राय है कि शिकायतकर्ता या गवाहों को सुरक्षा की आवश्यकता है तो नामित एजेंसी संबंधित सरकारी अधिकारियों को उचित निर्देश जारी करेगी।

iii. नामित एजेंसी के विपरीत निर्देशों के बावजूद सूचनाकर्ता की पहचान का खुलासा होने की स्थिति में, नामित एजेंसी इस तरह का खुलासा करने वाले व्यक्ति या एजेंसी के खिलाफ मौजूदा नियमों के अनुसार उचित कार्रवाई शुरू करने के लिए अधिकृत है।

1.3 जहां तक विभाग के भीतर उत्पीड़न या उत्पीड़न के खिलाफ सुरक्षा का संबंध है, आयोग व्हिसल ब्लोअर्स की ऐसी शिकायतों को उचित कार्रवाई के लिए संबंधित संगठन के सीवीओ को भेजता है।

भ्रष्टाचार हमारे समाज के लिए एक अभिशाप है। अत: हम सभी एकजुट होकर भ्रष्टाचार की इस लड़ाई में पूर्ण सहयोग देंगे। PIDPI भ्रष्टाचार के विरुद्ध एक सशक्त हथियार है।

"भ्रष्टाचार का विरोध करें, राष्ट्र के प्रति समर्पित रहें।"

ग्राहक सेवा - बैंकिंग का आधार

सुमित
लिपिक
विजयनगर शाखा
अमृतसर अंचल

सेवा क्षेत्र में सबसे बड़ी इंडस्ट्री बैंकिंग क्षेत्र है और यह पूर्ण रूप से ग्राहकों पर ही आधारित है। अत: बैंकिंग क्षेत्र की सफलता के मूल मंत्र में ग्राहक सेवा का बहुत ही महत्व है। हम यदि बैंकिंग की पृष्ठभूमि में झांक कर देखें तो हम पुराने जमाने से व्यक्तिगत खाता बही (लेजर) बैंकिंग करते रहे हैं, जहां पर ग्राहक का सीधा सम्पर्क बैंकर से रहता था तथा उसकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति उचित समय में पूरी होती रहती थी। सभी बैंक ग्राहकों को बचत खाते, चालू खाते, मीयादी जमा खाते तथा अग्रिम खातों की सुविधाएं सीधे प्रदान कर देते थे। इन सुविधाओं के अतिरिक्त मांग ड्राफ्ट सेवा, पे ऑर्डर सेवा, लॉकर सुविधा आदि सेवाएँ भी ग्राहकों को उनके आग्रह पर उपलब्ध कराई जाती थी। चूंकि सभी बैंकिंग कार्य हाथों से किया जाता था तथा इसमें समय भी पर्याप्त लगता था, फिर भी ग्राहक एक विशिष्ट संतुष्टि के साथ उसे ग्रहण भी करता था, क्योंकि इन सब में एक मानवीय दृष्टिकोण उपलब्ध था।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बैंकिंग क्षेत्र में ग्राहक सेवा के मायने बदल चुके हैं, क्योंकि बैंकिंग क्षेत्र में 1995 के पश्चात आमूलचूल परिवर्तन हुआ है। हम खाता-बही में हाथों से कार्य करते हुए सम्पूर्ण कंप्यूटरीकरण में परिवर्तित हो गए, सभी कार्य ऑनलाइन होने लगे, ग्राहकगण उक्त सुविधाओं से अवगत होकर उनका लाभ भी लेने लगे परंतु विभिन्न प्रक्रियाओं से अनभिज्ञ रहे। नई-नई सुविधाएँ तो तेजी से दी गई परंतु उसी तेजी से न तो स्टाफ को और न ही ग्राहकों को उन सुविधाओं के उपयोग के बारे में प्रशिक्षित किया गया।

चूंकि बैंकिंग सेवाओं का उत्तरोत्तर विकास होता रहा है और वर्तमान में भी जारी है। आज बैंकिंग सेवाओं में खातों को खोलने, मीयादी जमा बनाने, लेन-देन के सभी कार्य, निधि अंतरण, चेक बुक की मांग आदि कई सेवाएँ ग्राहकों को घर बैठे उपलब्ध हो रही हैं। इंटरनेट सेवाएँ, डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, ऋण हेतु आवेदन आदि सेवाएँ उपलब्ध होने से ग्राहक को बैंक की शाखा तक आने की भी आवश्यकता नहीं होती है। जगह-जगह नगदी जमा मशीनों के लग जाने से नगदी जमा करने हेतु भी ग्राहकों को बैंक तक आने की जरूरत नहीं रहती है।

परंतु इन सबके बावजूद हमारे देश में वित्तीय साक्षरता एक बहुत बड़ा प्रश्न है। क्योंकि बिना वित्तीय साक्षरता के जितने भी प्रयास बेहतर ग्राहक सेवा हेतु किए जा रहे हैं, वे सब बेमानी हो रहे हैं। क्योंकि दोनों तरफ की अशिक्षा असंतुष्टि ही पैदा कर रही है और इस कारण से आजकल बैंकिंग क्षेत्र की शिकायतों में बहुत अधिक इजाफा हुआ है। ग्राहकों को शिकायत करने के बहुत सारे फोरम तथा कई विकल्प भी उपलब्ध होने से एक ही कार्य के लिए तीन चार जगह शिकायत कर दी जाती है और जब तक ग्राहक की ओर एक तरफा फैसला नहीं हो जाता है, तब तक वे बंद नहीं हो पाती हैं। कई फोरम सही निर्णय देते हैं, जबकि कई फोरम व्यक्तिगत निर्णय दे देते हैं जो बैंकर के क्षोभ का कारण बनते हैं। ग्राहक के स्वयं के किए हुए कार्यों, जैसे कि अपनी जानकारी को अनियंत्रित तरीके से प्रदान कर देने, पासवर्ड को कहीं भी शेयर कर देने, फर्जी फोन कॉल अथवा प्रलोभन वालों के झांसे में आकर अपनी जानकारी सार्वजनिक करने, एटीएम पर सुरक्षा नियमों के पालन नहीं करने से होने वाली हानि को बैंक के ऊपर मढ़ देने तथा कतिपय फोरम द्वारा बैंक को ही दोषी मानने आदि से बैंकर की ग्राहक सेवा पर कुठाराघात होता है और ग्राहक सेवा विद्रूप बनती है।

आज की स्थिति में बेहतर ग्राहक सेवा हेतु न केवल बैंकर को निपुण होने की आवश्यकता है, वरन ग्राहकों को भी पर्याप्त रूप से वित्तीय साक्षरता प्रदान किए जाने की आवश्यकता है। वर्तमान समय में बैंकिंग सेवाओं के सम्पूर्ण कंप्यूटरीकरण में अधिकांश सेवाएं बैंकर द्वारा बाह्य एजेंसी के माध्यम से प्राप्त होती है; मसलन हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर, मशीनें आदि बाह्य एजेंसी से

मिलती हैं तथा उनका रखरखाव उन्हीं के द्वारा अथवा अन्य वेंडर के द्वारा किया जाता है। इस स्थिति में किसी कार्य के पूर्ण नहीं होने से सेवा में कमी बता कर बैंकर को ही दोषी ठहरा दिया जाता है।

विभिन्न बैंकों के मध्य भी इन दिनों व्यवसाय को लेकर कड़ी प्रतिस्पर्धा जारी है। शासन के नित नये नियम कानून, जन धन योजना, सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ, ऋण योजनाएँ, ऋण मेले, ग्राहक पहल कार्यक्रम आदि ने बैंकर को अत्यधिक व्यस्त किया हुआ है। वर्तमान में अंतरराष्ट्रीय मानकों के चलते ऋण खातों के रखरखाव, अत्यधिक एनपीए होने, वसूलियों के न हो पाने तथा अधिकांश स्टाफ के इन्हीं कार्यों में व्यस्त रहने से भी ग्राहक सेवा प्रभावित हो रही है। यह भी एक निर्विवाद सत्य है कि हम सेवा क्षेत्र से हैं, अतः बैंकिंग क्षेत्र में ग्राहक सेवा को बहुत ज्यादा महत्व देते हैं और यह भी सत्य है कि अच्छी ग्राहक सेवा से ही बैंकिंग का विकास संभव है।

बेहतर ग्राहक सेवा के लिए आवश्यक है कि बैंकों के प्रशिक्षण संस्थानों को अधिक उन्नत बनाया जाए ताकि वे समय-समय पर नव-पदस्थ अथवा पुराने स्टाफ को भी समुचित प्रशिक्षण प्रदान कर नवोन्मेषी बैंकिंग से अवगत करा सके ताकि स्टाफ सदस्य अपने कार्यक्षेत्र में बेहतर तरीके से कार्य कर अच्छी ग्राहक सेवा प्रदान कर सके। साथ ही, प्रत्येक स्तर पर वित्तीय साक्षरता केंद्र बनाए जाएँ ताकि वे लोग आमजन को बैंकिंग की सुविधाएँ प्रदान करने एवं ग्राहकगण उन्हें प्राप्त किए जाने की विधि से अवगत हो सके। देश में हमने करोड़ों बैंक खाते खोले हैं, परंतु उनके परिचालन और उनसे प्राप्त होने वाले लाभों के बारे में समुचित रूप से खातेदारों को अवगत नहीं कराया है। शिकायत निवारण संस्थाओं में बैंकिंग से संबंधित शिकायतों का निराकरण करते समय बैंकिंग का जानकार व्यक्ति आवश्यक रूप से हो और वह सही विषयवस्तु को ध्यान में रखे और जहां आवश्यक समझाइश दी जाना हो, अवश्य प्रदान करे। बैंकिंग उत्पादों से संबंधित सम्पूर्ण जानकारी उपलब्ध होनी चाहिए तथा उसे बैंकिंग स्टाफ के संज्ञान में भी होना चाहिए ताकि वह ग्राहक को शिक्षित कर उसे उत्पाद के गुण-अवगुण से परिचित करा सके। सॉफ्टवेयर निर्माण इस तरीके से हो कि वह एकरूपता में रहे तथा सभी आवश्यक जानकारी एक बार में ही प्राप्त कर एक बार में ही कार्य को पूर्ण रूप से संपादित किया जा सके। हम ग्राहकों को बार-बार आमंत्रित कर आवश्यक प्रपत्रों की पूर्ति कराते हैं जिससे ग्राहकों में असंतुष्टि पैदा होती है।

बैंकिंग में ग्राहक सेवा अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह बैंकिंग व्यवसाय से जुड़ा हुआ मुद्दा है। पुरानी बैंकिंग विधि में बैंकर ग्राहक संबंध मानवीय मूल्यों पर आधारित होकर व्यक्तिगत होते थे। वर्तमान में भी कतिपय सफल प्रबंधन वर्ग व्यक्तिशः बैंकिंग कर ग्राहक सेवा को उच्च स्तर पर बनाए हुए हैं। यह भी सत्य है की वर्तमान मशीनी युग में मानवीय मूल्य कमजोर साबित हो रहे हैं फिर भी हम अपने लोगों को प्रशिक्षित एवं शिक्षित कर ग्राहक सेवा को उत्तम बनाए रखने में सफल रहेंगे।

बैंकिंग सेवाओं और संपूर्ण बैंकिंग उद्योग के महत्व को ध्यान में रखते हुए, बैंक कर्मचारियों द्वारा अपने ग्राहकों को प्रदान की जाने वाली सेवाएं भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए बड़े मायने में और भी महत्वपूर्ण हो जाती हैं। यदि हम ग्राहकों को प्रदान की जाने वाली बैंकिंग सेवाओं की बात करे तो बैंक के कर्मचारी इस मामले में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्हें ग्राहकों को उत्कृष्ट सेवाएँ तो प्रदान करनी ही होती है बल्कि यह भी सुनिश्चित करना होता है कि वे अपने ग्राहकों की अपेक्षाओं / आवश्यकताओं को पूरा करें। ऐसा करने के लिए, बैंक कर्मचारियों को कोर कस्टमर सर्विस स्किल्स विकसित करने की आवश्यकता होती है जो उन्हें अपने ग्राहकों को सर्वोत्तम संभव तरीके से बैंकिंग सेवाएँ उपलब्ध कराने में मदद करती हैं। यहाँ हम उन महत्वपूर्ण कोर कस्टमर सर्विस स्किल्स पर चर्चा करेंगे जो बैंक के कर्मचारियों में होनी चाहिए ताकि वे अपने कस्टमर्स को निर्बाध और यादगार बैंकिंग अनुभव प्रदान कर सकें।

कम्युनिकेशन शायद किसी भी क्षेत्र में काम करने वाले कर्मचारी के लिए सबसे महत्वपूर्ण गुण है और यह बैंकिंग क्षेत्र में काम करने वाले कर्मचारियों के लिए भी सत्य है। अच्छे कम्युनिकेशन में सुनना और बोलना दोनों क्रियाएं शामिल होती हैं। ग्राहक द्वारा किये गए प्रश्नों/समस्याओं को ध्यान से सुनना और समस्या का सबसे उपयुक्त समाधान ढूंढना और अंत में अपने ग्राहक को इस समाधान को बताने/ समझाने में सक्षम होना ही एक अच्छी कम्युनिकेशन स्किल को प्रदर्शित करता है। आपको अपने ग्राहक को हर तरीके से संतुष्ट करने का प्रयास करना चाहिए। ग्राहक द्वारा पूछे गये हर प्रश्न का उत्तर या समाधान

इस तरीके से देने की कोशिश करिए जैसे आप किसी 5 वीं कक्षा के छात्र को कोई महत्वपूर्ण बात समझा रहे हो। भारतीय बैंकिंग उद्योग जो बहुराष्ट्रीय कंपनियों के सीईओ, किसानों और रोजाना मजदूरी करने वाले श्रमिकों से लेकर विभिन्न क्लाइंटों के साथ काम करता है, के लिए कम्युनिकेशन बहुत महत्वपूर्ण है। एक अच्छे बैंक कर्मचारी को ग्राहक के अनुसार अपनी कम्युनिकेशन तकनीकों को बदलने में सक्षम होना चाहिए तथा ग्राहक की समस्याओं को सरलतम तरीके से सुलझाने में और कम से कम समय-सीमा के भीतर सहायता प्रदान करने का प्रयास करना चाहिए।

बैंक के कर्मचारियों को हर रोज़ कई प्रकार के ग्राहकों से डील करनी होती है जिसमें से कुछ शिक्षित होते हैं और बैंक की नीतियों से अवगत हो सकते हैं। परन्तु कुछ अशिक्षित होते हैं और बैंकिग नियमों से परिचित नहीं होते हैं। एक बैंक कर्मचारी के रूप में आपको अपने ग्राहकों को उनके स्वभाव, उनकी शैक्षणिक या वित्तीय पृष्ठभूमि का विचार किए बिना खुशी से सहायता और सेवा करने में सक्षम होना चाहिए। भारतीय बैंकिंग क्षेत्र की सबसे बड़ी ताकत इसकी भेदभावहीन प्रकृति रही है, जो अपने सभी ग्राहकों को समान रूप से मानती है और उन सभी को गुणवत्ता सेवाएं प्रदान करती है। बैंक के कर्मचारियों को उत्कृष्ट आत्म-नियंत्रित और संयमित होना चाहिए और अपने ग्राहकों को महत्वपूर्ण नियमों और जटिल बैंकिंग नीतियों को धैर्यपूर्वक समझाना चाहिए। इस प्रकार बैंक के कर्मचारियों में धैर्य का होना अत्यंत आवश्यक है।

निष्कर्ष के तौर पर यह कहना उचित होगा कि ग्राहक सेवा ही सर्वोपरि विकल्प है, जो कि एक बैंक तथा एक राष्ट्र के लिए फायदेमंद साबित होगा। आज के इस युग में ग्राहक की संतुष्टि को ध्यान में रखते हुए ही बैंक को अपने कार्यक्रमों को कार्यान्वित किया जाना चाहिए ताकि सामाजिक उत्थान के साथ-साथ देश की अर्थव्यवस्था भी विकसित हो सके। अतः ग्राहक की विश्वसनीयता को बैंक की नींव कहना सार्थक होगा। बैंकिंग क्षेत्र में ग्राहकों की सेवा का मसला बेहद महत्वपूर्ण बन रहा है, क्योंकि यह सार्वजनिक हितों को पूरा करने वाला एक महत्वपूर्ण संस्थान है। प्रतिस्पर्धा के इस दौर में बैंकों की साख भी तब तक बनी रहती है, जब तक उस बैंक के ग्राहक पूर्ण रूप से संतुष्ट हैं। अतः बैंकिंग उद्योग के लिए ग्राहक सेवा ही सर्वोपरि है।

अरमान

अरमान अगर दब जाए,
बड़ी जद्दोजहद से...सीने में,
अश्कों के सैलाब फूटे तो भी
ले लेना मज़ा तू....जीने में ।

ये अलग बात है कि
हसरतों से पलते हैं सपने
ख्वाब में होते हैं कहीं न कहीं
बागवान के अपने ही अपने
पग डगमगाये अगर कदम बढ़ाने में
आशाओं के दामन थाम लेना जमाने में
कारवां चला है, चलता ही रहेगा
साँसों के सहारे मंज़िल पाने में ।

उम्मीद के आँगन में जब
सूख जाए पौधा जज़्बातों का
देखना टिमटिमाते तारों को
डर होता नहीं जिन्हें काली रातों का
मोती बिखर जाए अगर सजाने में
सब्र कर लेना थोड़ा धागा लगाने में
देखना, बन जाएगी सुंदर जीवन माला
वक्त दे देना थोड़ा मुस्कुराने में ।

पंख बिन होते नहीं परवाज़
कंठ बिन होते हैं आवाज़
मजबूर करें अगर ऐसे कोई हालात
के उड़ना पड़े अकेले खुले आकाश
देर न करना हौंसला बढ़ाने में
महफिल ढूँढना नहीं कहीं गुनगुनाने में
चल अकेला, चल अकेला, चल अकेला
लिख देना अल्फ़ाज़, हर बोलते अफसाने में ।

उत्तम कुमार पुरुषोत्तम
वरिष्ठ प्रबंधक
मानव संसाधन विभाग
पटना अंचल

एक यात्रा-वृतांत ऐसा भी

विनय कुमार सिंह
आंचलिक प्रबंधक
गुवाहाटी अंचल

एक कहावत है कि कभी कभी जबान पर सरस्वती का वास होता है और जो कहते हैं, वह सच हो जाता है। वैसे तो मैं इन चीजों पर यक़ीन नहीं करता हूँ लेकिन कभी कभी कुछ ऐसा घट जाता है कि बस सोचते ही रह जाना पड़ता है। खैर, ये वाक़या बिलकुल अभी का है, हमारी टीम कुछ कार्यवश गुवाहाटी से अगरतला गयी थी, एक दिन का कार्य था और दूसरे दिन लौटना था। गुवाहाटी से अगरतला की दूरी वैसे तो बहुत ज्यादा नहीं है लेकिन सड़क मार्ग काफी ख़राब है जिसके चलते लगभग 12 घंटे लग जाते हैं। इसलिए अमूमन लोग हवाई मार्ग से ही जाते हैं। बस एक ही दिक्कत है कि दिन में सिर्फ दो फ्लाइट है और ये दोपहर के बाद ही है। मतलब पूरा दिन चला जाता है इस यात्रा में, लेकिन कोई उपाय भी नहीं है। सोमवार को हम लोग दोपहर 1 बजे की उड़ान से निकले और दो बजे अगरतला पहुँच गए। अगरतला विमानतल नया बना है और काफी सुंदर है, अंदर भी हरियाली रखने का प्रयास किया गया है जो देखकर काफी अच्छा लगता है। एयरपोर्ट से बाहर निकलने पर हरियाली और सुकून मिलता है। भीड़भाड़ नहीं है और लोग प्रसन्न दिखते हैं। बहरहाल हम लोग जैसे ही विमानतल से बाहर निकले, अगरतला का स्टाफ आया हुआ था और उनके साथ हम लोग होटल रवाना हो गए। होटल में भोजन करने के बाद जिस कार्यालय का उद्घाटन करना था, वहां गए और उसके बाद मीटिंग में ही रात के 8 बज गए।

नार्थ ईस्ट की खूबसूरत परंपरा के अनुसार हम जहाँ भी जाते हैं, एक गमछा जरूर गले में पहनाया जाता है। मीटिंग के बाद हम लोग वापस होटल आ गये और खाना खाकर बगल में स्थित उज्जयंत महल देखने चले गए। रात के चलते महल तो बंद था लेकिन बाहर फ़ास्ट फूड की दुकानें लगी हुई थीं और लोग मोमोस और चाउमीन खा रहे थे। कुछ देर यूँ ही टहल कर हम लोग वापस होटल आ गए। अगले दिन की फ्लाइट दोपहर के तीन बजे की थी और हम लोगों ने सुबह एक दो शाखा में जाकर फिर निकलने का कार्यक्रम बनाया। लगभग 12 बजे तक हमारा कार्य ख़त्म हो गया था तो सोचा गया कि उज्जयंत महल में स्थित म्यूजियम को देख लिया जाए। म्यूजियम बहुत व्यवस्थित तरीके से बना हुआ है और देखने लायक है। न सिर्फ त्रिपुरा, बल्कि पूर्वोत्तर के बाकी अन्य छह प्रदेशों के बारे में भी वहां काफी जानकारी मिली।

वहां से निकलने के बाद भोजन करना था और एयरपोर्ट जाना था। चूँकि शहर काफी छोटा है तो एयरपोर्ट भी काफी नजदीक है और खाना खाने के बाद भी थोड़ा समय बच गया था तो बगल में स्थित बांग्लादेश की सीमा को भी देखने का मौका मिल गया। वैसे तो बांग्लादेश की सीमा पूर्वोत्तर में कई जगहों से मिलती है इसलिए आप कहीं भी जाइए, आपको कोई न कोई जगह मिल ही जायेगी जहाँ से आप बांग्लादेश सीमा के दर्शन कर सकते हैं। खैर, वहां से निकलकर हम लोग एयरपोर्ट पहुंचे और अगले 10-15 मिनट में ही हम लोग सिक्युरिटी चेक के बाद अंदर थे। विमान के उड़ने में अभी भी लगभग डेढ़ घंटा बाकी था और जिस विमान को गुवाहाटी जाना था वह अभी तक आया नहीं था इसलिए हम लोग आराम से टहलने लगे और फिर कुर्सियों पर धंस गए। एकाध घंटे बाद पता चला कि हमें गेट नंबर 4 से जाना है इसलिए हम लोग उस गेट के सामने जाकर बैठ गए।

मोबाइल फोन के होने से भले ही अब लोग परेशान रहने लगे हैं लेकिन जब आपको इंतजार करना हो तो इसके चलते समय बहुत आसानी से कट जाता है। हम लोग भी अपने अपने फोन में लगे हुए थे और कब पौने तीन बज गए, पता ही नहीं चला। खैर हमारे एक कलीग को ध्यान आया कि समय होने वाला है लेकिन अभी तक यात्रियों की बोर्डिंग भी शुरू नहीं हुई है तो उन्होंने जाकर पता लगाया। उनको सूचना मिली कि चूँकि

मौसम ख़राब है इसलिए अभी तक विमान आया ही नहीं है। अब जब विमान आएगा, तभी तो जाएगा इसलिए इन्तजार शुरू हुआ। आधे घंटे बाद पता चला कि विमान आ गया है और हम लोगों की यात्रा थोड़े समय बाद शुरू होगी। इससे भी कोई ज्यादा दिक्कत नहीं थी क्योंकि गुवाहाटी तक जाने में सिर्फ 45 मिनट लगना था। इन्तजार करते हुए लगभग साढ़े चार बज गए लेकिन यात्रा शुरू होने का कोई आसार ही नजर नहीं आ रहा था। सुकासा एयरलाइन का बोईंग विमान सामने खड़ा दिखाई पड़ रहा था इसलिए उम्मीद बनी थी लेकिन उड़ान में देरी बढ़ती जा रही थी। एयरलाइनवाला लगातार समय बढ़ा रहा था और बता रहा था कि कुछ तकनीकी दिक्कतों के चलते देर हो रहा है।

यही वह समय था जब मेरे जुबान से निकला कि आज तक मैंने कई हवाई सफर किए हैं लेकिन न तो कभी फ्लाइट कैंसिल हुई है और न ही कभी विमान वालों ने अपनी तरफ से होटल में ठहराया है। अब घड़ी की सुई लगभग 5 से आगे निकल गयी थी और लोगों ने शोरगुल मचाना शुरू कर दिया। तभी एयरलाइन वालों की तरफ से घोषणा हुई कि चूँकि उड़ान में देर हो रही है इसलिए हल्का नाश्ता और चाय की व्यवस्था उनकी तरफ से की जा रही है। बहुत से लोगों ने यह सोचकर दोपहर का भोजन भी नहीं किया था कि गुवाहाटी में पहुंचकर भोजन करेंगे, इसलिए उन लोगों को भूख भी लग गयी थी। बहरहाल थोड़ी देर तक नाश्ता बंटता रहा और लोग खाते हुए चुप रहे लेकिन जैसे ही नाश्ता ख़त्म हुआ, एक और घोषणा हुई कि आज फ्लाइट नहीं जायेगी और कल जायेगी। जिसे टिकट कैंसिल करवाना हो वह करवा सकता है और जिसे कल जाना है वह कल चल सकता है।

इस अनाउंसमेंट ने तो जैसे मधुमक्खी के छत्ते को छेड़ दिया, लोगों ने एयरलाइन के काउंटर को घेर लिया और फिर लड़ाई- झगड़ा शुरू हुआ। लोगों का कहना था कि आप आज ही दूसरी फ्लाइट की व्यवस्था करो और हमें गुवाहाटी ले चलो। कुछ लोगों को आगे भी जाना था और कुछ लोगों को अगले दिन सुबह कहीं जाना था। इस दरम्यान मैं तो अपनी कुर्सी पर ही बैठा रहा और हमारे कलीग ने भीड़ का हिस्सा बनकर जानकारी लेने का प्रयास किया। लगभग 70 - 80 लोग तीन चार कर्मचारियों को घेरे हुए थे और उनमें से एक व्यक्ति जो उनका बॉस था, वह थोड़ी थोड़ी देर में कुछ न कुछ बता रहा था। हमारे कलीग भी कुछ देर में हमारे पास आकर ताजा समाचार सुना जाते थे और मैं ख़ामोशी से बैठकर उस तमाशे को देख रहा था। ऐसी भीड़ में अपने आप कुछ लोग लीडर बन जाते हैं और वह सभी लोगों की तरफ से बातचीत करते हैं जिसका समर्थन सभी बाकी लोग करते हैं। यहाँ भी ऐसा ही हुआ और चार पांच पुरुष और दो महिलाओं ने लीडर होने की जिम्मेदारी संभाली और एयरलाइन वालों से वाक् युद्ध शुरू हो गया। एकाध घंटे में एयरलाइन वालों ने यह स्पष्ट कर दिया कि आज कोई और फ्लाइट नहीं आएगी और आप लोग कल ही जा सकते हैं। इस दरम्यान हल्ला-गुल्ला सुनकर सी.आई. एस.एफ. वाले भी आ गए और बीच बचाव कर रहे थे और कभी एयरलाइन वालों को तो कभी यात्रियों को समझा रहे थे। सोशल मीडिया के प्रभाव के चलते कुछ लोग लगातार वीडियो बना रहे थे और ऐसा लग रहा था कि वहां तमाम पत्रकार पहुँच गए हैं। अब मैं भला कैसे चूकता, मैंने भी बैठे-बैठे कुछ फोटो ले लिए और वीडियो भी बना लिया जिसे मैंने अपने घर वालों इत्यादि को भेज दिया।

यह सब चल ही रहा था कि एक बिल्ली मुझे सामने से आती नजर आई, पहले तो मुझे भरोसा ही नहीं हुआ कि एयरपोर्ट पर बिल्ली कैसे रह सकती है। लेकिन वहां मौजूद कुछ कर्मचारियों और दूकान वालों ने बताया कि यह बिल्ली शुरू से ही यहीं रहती है और सब लोग इसे भोजन देते हैं। उसी वक़्त सामने मौजूद एक एयरलाइन स्टाफ मेरे पास आई और उसने पूछा कि क्या आप भी एयरलाइन से ही ट्रेवल करने वाले हैं। मैने जब 'हाँ' में जवाब दिया तो उसने आश्चर्य से पूछा कि आप तब से आराम से बैठे हुए हैं और उस झगड़े में नहीं जा रहे हैं। मैंने हँसते हुए कहा कि वहां जाने से भी क्या फायदा होगा, बाकी लोग तो लगे ही हुए हैं। उसने गहरी सांस लेकर कहा कि काश ! बाकी लोग भी आप की ही तरह के होते तो इतनी लड़ाई नहीं होती।

फिर एयरलाइन वालों ने एक और घोषणा की कि लोग वापस चले जाएँ और कल 1 बजे की फ्लाइट से उनका टिकट किया जाएगा। यह सुनते ही स्थिति नियंत्रण से बाहर निकल गयी, लोग चिल्लाने लगे कि हमारे लिए होटल का इंतजाम करो। हमारे बीच में एक यात्री बीमार थे और उनको लेकर भी बाकी लोग काफी चिंतित थे। कुछ लोग बहुत जोर जोर से चिल्ला रहे थे और एक व्यक्ति ने शायद फेसबुक लाइव कर दिया

और वह सबको दिखाने लगा कि देखिये एयरलाइन वाले किस तरह से सबको फंसा रहे हैं। एक ने तो लाइव वीडियो में प्रदेश के मुख्यमंत्री को बुलाना शुरू कर दिया कि आप आइए और हमारी मदद कीजिए। इस लाइव वीडियो के बाद एयरलाइन वाले थोड़ा भयभीत हुए और एयरपोर्ट अथॉरिटी का भी एक वरिष्ठ अधिकारी हमारे पास आ गया। कुछ यात्री ऐसे थे जिनको सुबह गुवाहाटी में कामाख्या देवी का दर्शन करना था तो कुछ छात्र भी थे जिन्हें किसी परीक्षा के लिए जाना था। लेकिन अभी भी एयरलाइन के लोग होटल की व्यवस्था करने के लिए तैयार नहीं थे और यात्री बिना होटल किये वहां से जाने के लिए राजी नहीं थे। मेरे ख्याल में वह अपने बॉसेस को स्थिति के बारे में बताकर उनसे निर्देश ले रहा था जो उसके कार्य के हिसाब से ठीक ही था। लेकिन लोगों की समस्या भी जायज थी कि आखिर वो लोग रात में कहाँ जाएँ और होटल भी अपने पैसे से क्यों जाएँ।

खैर एयरपोर्ट अथॉरिटी और सी आई एस एफ़ वालों के दबाव के चलते एवं हमारे बीच के स्वयंभू नेताओं के चलते आखिरकार तमाम हल्ला गुला, चिल्ला चोट और कुछ अपशब्दों के आदान प्रदान के बाद एयरलाइन वाले रात के 11 बजे होटल करने के लिए तैयार हुए, फिर खाने का भी इंतजाम किया गया और अगले दिन दोपहर 12 बजे की फ्लाइट से हम सबको भेजने के लिए आश्वासन दिया गया। अब तक हम लोग इतना समय उस जगह पर गुजार चुके थे कि एयरपोर्ट का हर कर्मचारी हमें पहचान गया था। कोई और फ्लाइट जाने वाली नहीं थी तो उनको एयरपोर्ट भी खाली करवाना था। और हमारे चलते बहुत से कर्मचारी जो शायद 8 बजे तक घर चले गए होते, वहीं अटके पड़े थे। इतने हो-हंगामे के बाद अगले दिन का दूसरा टिकट लेकर हम लोग रात के 11.30 बजे सबको टाटा बाय-बाय करके एयरपोर्ट से बाहर निकले और रात 12 बजे होटल पहुंचे। भूख सबको जमकर लगी हुई थी इसलिए जो डब्बे का भोजन मिला, सबने बिना ना नुकुर किये दबाकर खाया और फिर सब लोग कमरे में जाकर सो गए। लेकिन अभी भी हमारे मन में धुकधुकी लगी हुई थी कि अगर अगले दिन भी फ्लाइट नहीं गयी तो क्या होगा क्योंकि उनका बोईंग विमान तो रनवे पर ही खड़ा था जो खराब था और उसी को कल जाना था। अब कोई और रास्ता तो था नहीं; इसलिए कल जो भी होगा, देखा जाएगा वाला भाव लेकर हम लोगों ने विश्राम किया।

बहरहाल सुबह हम सबने होटल में भरपेट नाश्ता किया और 10 बजे एयरपोर्ट जाने के लिए तैयार हो गए। नीचे लॉबी में स्थानीय अंग्रेजी और बांग्ला का अखबार रखा हुआ था जिसमें काफी बड़ा समाचार कल की घटना के बारे में था। थोड़ी देर में एक मारुती वैन और एक अन्य बड़ी गाड़ी में हम सब लदे फंदे एयरपोर्ट पहुंचे तो वहां मौजूद एयरपोर्ट के सभी स्टाफ सदस्यों ने हमें पहचान लिया। एक बार फिर से बोर्डिंग पास बनवाया गया और सिक्योरिटी चेक के बाद हम लोग पुनः गेट संख्या 4 पर पहुंचे। कल वाले एयरलाइन के अधिकारी आज सुबह से ही एयरपोर्ट पर मौजूद थे और लगातार हमसे हंस-हंस कर बातचीत कर रहे थे। वैसे तो वह कल अपने कंपनी का पैसा बचाने में असफल हो गए थे लेकिन जिस धैर्य के साथ उन्होंने 80 से ज्यादा लोगों का सामना किया, उसने हम सबको बहुत प्रभावित किया। चलते-चलते उन्होंने हमसे फीडबैक देने की गुजारिश की तो हमने भी हाँ कर दिया। यह सब घटनाक्रम मुझे लगातार अपने क्षेत्र में होने वाले शादी विवाह समारोह की याद दिला रहा था जिसमें शादी के पहले दोनों पक्षों में जमकर तू-तू मैं-मैं होती है, विवाद होते हैं लेकिन शादी के बाद सब लोग सब कुछ भुलाकर इस तरह से आपस में हंसी-मजाक करते हैं जैसे कुछ हुआ ही नहीं था।

इस बीच पता चला कि बाकी सब तो आ गए हैं लेकिन पायलट महोदय नहीं आये हैं तो हमारी चिंता बढ़ गयी। लेकिन थोड़ी देर बाद ही पायलट और अन्य स्टाफ नजर आए तो हमारी जान में जान आई। ये अलग बात थी कि पायलट महोदय ने कहा कि उनको स्टेपलर चाहिए तो हमारी पेशानी पर बल पड़ गए। दरअसल हमें बताया गया कि कल विमान पर बिजली गिर गयी थी और इसी के चलते विमान कल उड़ने की स्थिति में नहीं था। अब स्टेपलर से पायलट महोदय विमान का कौन सा पुर्जा चिपकाते, यह सोचकर हम लोग हंसने लगे। खैर खुदा-खुदा करते विमान 12 बजे से पहले ही उड़ गया और हम लोग एग्जिट द्वार के पास ही आकर बैठ गए कि अगर खुदा न खास्ता विमान को आपात स्थिति में उतरना पड़े तो हम लोग फटाफट उतर जाएंगे। लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हुआ और विमान अगले 45 मिनट में गुवाहाटी हवाई अड्डे पर आराम से पहुँच गया। बस ये जरूर हुआ कि हमारी दोनों ख्वाहिशें पूरी हो चुकी थीं (फ्लाइट भी कैंसिल हुई और हमें होटल में भी ठहराया गया)।

जमी बर्फ

नटेश्वर कमलेश
लिपिक
दमुआ शाखा
जबलपुर अंचल

बर्फ की चादर ओढ़े ये धरती, इसे देखा था पहले भी लेकिन या हरा या माटी जैसा पहाड़, पेड़ सभी तो बर्फ में डूबे हुए थे। एक घर से बाहर निकलते एक बुजुर्ग बड़े-बड़े जूते पहने हुए थे। गर्म कपड़ो ने दुबले-पतले शरीर को भी तंदरुस्त दिखा दिया था, आज तो सभी उनकी ही तरह चल रहे थे आहिस्ता-आहिस्ता, सभी ठंड से अकड़े भी थे। उन्हे खुशी भी महसूस हो रही थी। इसीलिए नहीं कि आज उनकी कमी या उनका बुढ़ापा छिप गया है, या कहा जाये तो सब ही उनकी तरह हो गये है। इसीलिए कि इन वादियों को देखने के लिए उन्होंने कई वर्ष इंतज़ार किया था। बहुत-से छोटे-छोटे एफडी खुलवाएँ, कई बार बचत करने की कोशिश भी की लेकिन हर बार या तो इलाज में या बच्चों की पढ़ाई में वो राशि खर्च हो जाया करती थी। अपनी पत्नी के साथ इन वादियों मे घूमने का, बच्चों के साथ बर्फ के गोले बना कर एक-दूसरे को मारने का सपना तो सपना ही रह गया।

ईश्वर जी के बेटे का ट्रांसफर कुछ ही दिनों पहले यहाँ शिमला में हुआ था। पहले गर्मी का मौसम रहा फिर बारिश पूरे सात महीने बाद ये बर्फ देखने को मिली जो इस मौसम की पहली बर्फबारी थी।

उनकी साँसों से व मुँह से निकलता धुंआ वे बड़े ध्यान से देख रहे थे। सामने से उन्हे उनका बेटा आशुतोष आता हुआ नज़र आया। वह थोड़ा जल्दी में था, पता नहीं किस चीज़ की जल्दी थी। रास्ते में ही ईश्वर जी ने उसे रोका क्या हुआ निर्णय? यहाँ से कहीं ओर जाना पड़ेगा क्या? हाँ पापा ट्रांसफर कर देंगे यदि तरक्की चाहिए तो जाना ही पड़ेगा। बेटा अंदर चला गया।

दोनों बाप बेटे के रिश्ते में भी बर्फ जमी हुई थी, बचपन मे जो दोनों एक दूसरे के सबसे अच्छे दोस्त हुआ करते थे, आज बात करने से भी कतराते हैं।

ईश्वर जी कहना चाहते थे- बेटा कुछ दिन और नहीं रुक सकते क्या यहाँ। लेकिन दूरियों ने कुछ कहने ही नहीं दिया।

ईश्वर जी ने अपनी पत्नी से कहा तुम कहो ना उससे की रुके थोड़ा। वे बोलीं आप ही कहिये उसकी तरक्की की बात है, मैं नहीं बोल सकती। वैसे भी आप सीधे उससे क्यूँ नहीं कहते? ईश्वर जी ने उत्तर दिया-बचपन में तुम भी तो उसकी सारी जरूरतें मुझ से कहती थी। पत्नी का उत्तर मिला आप भी तो यही कहते थे-उससे कहो मुझ से बात करे।

आशुतोष ये सब सुन रहा था। ईश्वर जी की ये बात कि वो कभी यहाँ आना चाहते थे वो आज उसे पता चली।

मन में एक नाराज़गी भी आयी पापा मुझसे क्यों नहीं कह सकते लेकिन फिर ध्यान आया की मैं भी तो उनसे कुछ नहीं कह पाता था। फिर सोचा कि पापा ने जब भी मुझे जरूरत थी कभी समय ही नहीं दिया। इस बात से एक बेचैनी ने आशुतोष को घेर लिया। कुछ दिनों पहले जब ईश्वर जी को हलका बुखार था वे चाह रहे थे आशुतोष उन्हे डॉक्टर के पास ले जाये, लेकिन जरूरी मीटिंग के कारण उसे जाना पड़ा। हालाँकि उसने डॉक्टर को ही घर भेज दिया था।

आशुतोष ने सोचा मजबूरी भी होती है। पापा ने भी शायद इसीलिए समय नहीं दिया होगा। जैसे आज मैं नहीं दे पा रहा हूँ।

यही ख्याल ईश्वरजी के मन में भी था। जब भी आशुतोष मेरा समय मांगता था मैं उसे दे नहीं पाता उसे भी उतना ही बुरा लगता होगा जितना मुझे लगा।

आशुतोष ने सोचा मैं बड़ा हो रहा था और पापा बूढ़े दोनों

की सोच बदल रही थी, मैं लड़कपन में जो चाह रहा था पापा जिम्मेदारी के कारण उसे दूर करना चाह रहे थे। इन्हीं सब विचारों के साथ आशुतोष गहरी नींद में खो गया।

सुबह आशुतोष ऑफिस के लिए निकला। ईश्वर जी घर के भीतर ही टहल रहे थे। पाँव लड़खड़ाए वे अचानक पास ही रखी एक मूर्ति पर गिरे। वे तो संभाल गये लेकिन वह महंगी मूर्ति टूट गई।

आशुतोष भाग कर उनके पास आया- आप ठीक तो हैं कहीं चोट तो नहीं आई, आशुतोष का पूरा ध्यान अपने पिताजी पर था उसके मन में जरा था भी ख्याल नुकसान का नहीं आया।

ऑफिस जाते समय फिर उसके मन मे ख्याल आया। जब मैं बचपन में कोई सामान तोड़ देता या गिर जाता तो पापा पहले देखते मुझे चोट तो नहीं है फिर मुझे मारते। आज बात समझ आयी उन्हे चिंता मेरी थी न कि किसी और चीज़ की।

आशुतोष आज ऑफिस मे पुरी तरह शांत था। कुछ देर तक एक लेटर टाइप करता था, फिर अपने मैनेजर के केबिन से प्रसन्नता पूर्वक निकला।

अगले दिन सुबह घर से बाहर से आवाज़ आई पापा.. पापा..

जैसे हीं ईश्वर जी बाहर आये एक बर्फ की गेंद उनके मुँह पर पड़ी। थोड़ी देर साथ खेलने के बाद एक टैक्सी घर के सामने खड़ी थी।

माँ, पापा जाइये, शिमला की वादियों के हाथ मे हाथ लेकर घूमने का आज मौका है।

आशुतोष ने मजाकिये अंदाज़ मे कहा।

आज ईश्वर जी ने एक दोस्त की तरह आशुतोष के कंधे पर हाथ रखा।

आशुतोष ने कहा- पापा आप अब पूरे मौसम तक यहाँ घूम सकते हो।

छ: महीने हम कहीं नहीं जा रहे।

जैसे-जैसे जमीन में बर्फ की चादर बढ़ रही थी। दोनों के दिलों मे जमी बर्फ पिघल रही थी।

बेटी के जन्मदिन पर पिता के आशीष वचन

नन्ही सी परी, खुशियों से भरी,
हँसती रहो, खिलखिलाती रहो,
जीवन भर यूँ ही मुस्कुराती रहो ।।

फूलों सा महकता रहे जीवन तुम्हारा,
कामयाबी चूमे हर कदम तुम्हारा,
सदा है तुम पर यह आशीर्वाद हमारा ।।

मुश्किल से कभी घबराना नहीं ।
परेशानी में कभी टूट जाना नहीं ।।

हिम्मत और लगन से सफल हो ऐसी ।
कि हर मां-बाप चाहे तुम्हारी जैसी बेटी ।।

ईश्वर का रहे तुम पर कृपा विशेष,
सफल डॉक्टर बनकर लो सबका आशीष ।।

प्रार्थना ईश्वर से है बस अब यही ।
कोई गम जिन्दगी में न आये कभी ।।

मिले जीवन भर की खुशियाँ तुम्हे ।
इससे ज़्यादा और क्या चाहिए हमें ।।

हँसती रहो हमेशा तुम अपनों के बीच ।
खिलती रहो यूँ ही तुम लाखों के बीच ।।

रोशन रहे जीवन प्रखर ज्ञान (प्रज्ञा) से ।
जैसे रहता है आकाश सूरज के बीच ।।

अपने प्रज्ञा नाम को सार्थक करो ।
प्रखर ज्ञान बन मार्गदर्शक बनो ।।

नेक दिल इंसान हो तेरी पहचान।
तुम बनो देश और नारी की शान ।।

अविनाश कुमार मंदिलवार
मुख्य प्रबंधक
एसटीसी कोलकाता

“अधूरी कहानी पूरी करो” प्रतियोगिता के प्रथम पुरस्कार विजेता

शिक्षा मिटाए गरीबी का अंधकार

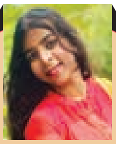

विधि
अधिकारी
सूचना प्रौद्योगिकी विभाग
प्रधान कार्यालय

‘अगले शनिवार तक पैसे लौटा देना, नहीं तो तेरी इस दुकान का सारा समान उठाकर ले जाएंगे और इस पर ताला लगवा देंगे.....।’

हंगामा सुनकर शालिनी ने सीट से उठकर, शाखा के बाहर जाकर देखा तो नुक्कड़ पर धर्मराज अपने कुछ गुंडों के साथ धनीराम को धमका रहा था। धर्मराज एक दबंग व्यक्ति है और बहुत महंगे ब्याज पर लोगों को पैसे उधार देता है। धनीराम ने धर्मराज से पैसे उधार लेकर हमारी शाखा के पास नुक्कड़ पर ही चाय-नाश्ते की छोटी-सी दुकान शुरू की थी। इस मोहल्ले में शाखा को खुले हुए कुछ सप्ताह ही गुजरे हैं और धनीराम की दुकान अभी तक ढंग से चल नहीं पाई है, इसलिए उसे कमाई से ज्यादा ब्याज चुकाना पड़ रहा था। पुत्र-मोह में चार बेटियों का पिता बन चुके धनीराम को अब दिन-रात घर का खर्च चलाने की चिंता ने सुखा कर कंकाल जैसा बना दिया है। सालों से कभी फल-सब्जी की रेहड़ी लगाकर, कभी घूम-घूमकर घरेलू सामान बेचकर वह जैसे-तैसे अपनी बेटियों को पढ़ा रहा था। उसकी बड़ी बेटी ने तो अबकी बार मेडिकल की प्रवेश परीक्षा में टॉप किया है और बेटी का दाखिला कराने के पैसे तो दूर की बात है, धनीराम की हालत धर्मराज जैसे सूदखोर का ब्याज तक चुकाने की नहीं है। चाय की दुकान बंद कराने की धमकी सुनकर सहमा-सा धनीराम स्टोव बंद करने ही लगा था कि तभी शाखा में नई ब्रांच मैनेजर बनकर आई शालिनी ने आवाज लगाकर धनीराम को शाखा में चाय देकर जाने के लिए कहा ....

.. धनीराम को उदास देखकर शालिनी ने धनीराम से उसकी उदासी कारण पूछा। कुछ देर तक तो धनीराम खामोश रहा, लेकिन शालिनी के बहुत जोर देने पर धनीराम ने उसे सारी व्यथा कह सुनाई। शालिनी ने धनीराम को समझाया कि वह अपनी बेटी की उच्च शिक्षा लिए बैंक से शिक्षा ऋण के लिए आवेदन करे और धर्मराज के पैसे के चुकाने के लिए वह बचत करने के साथ-साथ गहने, संपत्ति आदि को गिरवी रखकर बैंक से ऋण ले ले। धनीराम ने अपनी जमापूंजी और गहने आदि गिरवी रखकर कुछ पैसे इकट्ठे किए लेकिन फिर भी ब्याज सहित धर्मराज के सारे पैसे नहीं लौटा सका। शनिवार को धर्मराज के आदमी आकर धनीराम की दुकान का सारा समान उठा ले गए और उसे व उसके परिवार को उनके घर से निकाल दिया। जैसे-तैसे धनीराम और उसके परिवार ने दुकान पर वक्त गुजारा। सोमवार को जब शालिनी ने धनीराम और उसके परिवार की बुरी हालत देखी तो अपनी शाखा के सभी अधिकारियो को धनीराम की सहायता करने के लिए अनुरोध किया तथा सभी स्टाफ सदस्यों द्वारा दिए गए पैसों से धनीराम की दुकान का समान खरीदा और उसकी चाय की दुकान फिर से शुरू करवाई। उसने धनीराम की पत्नी को अपने घर पर खाना आदि बनाने के लिए भी काम पर रख लिया। कुछ दिन बाद धर्मराज फिर धनीराम की दुकान पर आ पहुँचा तथा अपने बचे पैसे मांगने लगा। उसका कहना था कि तुम्हारी दुकान का सामान और झोपड़ी को बेच कर ब्याज के पैसे भी पूरे नहीं हुए हैं। मूलधन तो अभी भी बाकी है। धर्मराज ने पैसे नहीं देने पर उसकी बेटियो को उठा कर ले जाने की धमकी तक दे डाली। शालिनी ने धनीराम की बड़ी बेटी को शिक्षा के लिए उसे बैंक से शिक्षा ऋण दिलाया तथा धनीराम को मूलधन के तीस हज़ार रुपए दिए ताकि धर्मराज का कर्ज चुका सके। शालिनी ने उसकी छोटी बेटियों को पढ़ाने का भरोसा भी दिया। धनीराम ने भी शालिनी को विश्वास दिलाया कि वह मेहनत कर सारे पैसे

जल्दी चुका देगा। धनीराम जब धर्मराज के पैसे लौटाने उसके पास जा ही रहा था तो रास्ते में किसी ने धनीराम के सारे पैसे चुरा लिए और जब धनीराम खाली हाथ धर्मराज के पास पहुंचा तो धर्मराज के आदमियों ने उसे बहुत मारा तथा उसके हाथ-पैर भी तोड़ दिए। ऐसी विकट परिस्थितियों में शालिनी की सलाह पर धनीराम की बड़ी बेटी अपनी शिक्षा के साथ-साथ ट्यूशन पढ़ाने का काम भी करने लगी तथा धनीराम की पत्नी भी शालिनी के घर में काम करने के साथ-साथ अन्य घरों में काम करके कुछ पैसे कमाने लगी। शालिनी ने उसे अपनी सोसाइटी के कई घरों में काम दिलवा दिया। इससे धनीराम के घर का गुजारा होने लगा तथा उसकी अन्य बेटियां भी शिक्षा में अच्छा प्रदर्शन करने लगी। धनीराम भी लंबे समय बाद अपनी बेबसी से उबर कर चाय की दुकान चलाने लगा। समय बीतने के साथ-साथ, अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद धनीराम की बड़ी बेटी हृदय रोग विशेषज्ञ बन गई, उसकी दूसरी बेटी एक स्कूल मे अध्यापिका बन गई तथा उसकी तीसरी बेटी सेना मे भर्ती हो गई।

एक दिन धनीराम की बड़ी बेटी मालती के पास एक हृदय रोगी आया, वह रोगी कोई और नहीं धर्मराज था। धर्मराज को हृदयाघात हुआ था तथा पहले अस्पताल के डॉक्टरों ने उसकी गंभीर हालत के कारण उसे मालती के अस्पताल में रेफर किया था। एक बार तो मालती को लगा कि ऐसे व्यक्ति का जीवन न बचाना ही उचित है, परन्तु फिर उसे शालिनी की बात याद आई कि हमें अपने कर्तव्य का निर्वहन निष्ठापूर्वक करना चाहिए। मालती ने धर्मराज का ऑपरेशन किया तथा उसकी जान बचा ली। होश मे आने के बाद मालती को अपने सामने देख कर धर्मराज घबरा गया तथा जब उसे पता चला कि उसकी जान मालती ने बचाई है, तो उसे अपने किए पर शर्म आने लगी। ठीक होकर जब वह अस्पताल से निकला तो सीधा धनीराम के पास गया और उसके चरण में गिर गया तथा अपने किए की माफी मांगने लगा। धनीराम ने उससे वादा करने को कहा कि वो अब किसी भी गरीब को परेशान नहीं करेगा और लोगों की सहायता करेगा।

तुम्हें ही पड़ी है

अक्सर पूछती हूँ माँ से,
पापा की, भाई की, दादा की, दादी की,
सुबह के चाय की, भाई के टाई की,
घर के बर्ताव की, अतिथियों के सत्कार की,
तुम्हें ही क्यूँ पड़ी है ?

सुलझाती हमारी उलझनों को,
यूँ जैसे काँटों से सुलझाती हो ऊन का गोला,
दादी की गर्म रोटी, पापा की झुंझलाहट,
या बच्चों का कोई झमेला,
तुम्हें ही क्यूँ पड़ी है... ?

एग्जाम्स हो हमारे, पर फिक्र तुम्हारी,
तबियत खराब हो तेरी फिर भी जिक्र हमारा,
कभी नरम रुई सी, कभी नारियल सी कड़ी,
माँ तुम्हें सबकी क्यूँ है पड़ी ... ? ?

चेहरे पर मुस्कान लिए,
दिल में हजार ख्वाहिशें दफन किए,
भागती रसोई से छत तक,
सारे घर का बोझ लिए ।

तेरे पास हर उलझन की कड़ी है,
जैसे पास तेरे कोई जादू की छड़ी है,
क्यूँ माँ ... ? ?
तुम्हें सबकी क्यूँ पड़ी है.. ?

अनुप्रिया भारती
अधिकारी
वित्तीय समावेशन विभाग
भागलपुर अंचल

क्या तुम हो भगवान??

सौरभ मणि त्रिपाठी
वरिष्ठ प्रबन्धक
एसएमईसीसी वाराणसी

क्या तुम हो भगवान? यह प्रश्न पूछने की जरूरत ही क्या है? मैं तो बचपन से जानता हूं कि तुम हो। जब चार - पांच साल का था मैं, और मैंने मां से पूछा कि मैं कहां से आया हूं तो मां ने बताया था कि भगवान के यहां से। हो सकता है कि मां ने जवाब यूं ही बच्चे को टालने के लिए दे दिया हो परंतु मैं तो तब से ही मान बैठा था कि तुम हो। मुझे जल्दी से बड़ा कर देने, स्कूल की छुट्टी करवा देने, जन्मदिन पर साइकिल दिलवा देने जैसी बहुत सारी मिन्नतें मैं तुमसे ही तो किया करता था। कई बार जब मेरी प्रार्थनाएं अनसुनी रह जाती थीं या यूं कहें कि मेरी ज़िद पूरी नहीं हो पाती थी तो मैं तुमसे लड़ भी लिया करता था, तुमको भला बुरा भी कहता था लेकिन तुम हो या नहीं ऐसी शंका तो कभी नहीं हुई।

थोड़ा बड़े होने पर प्यार धीरे - धीरे डर में बदलने लगा और लालच तो था ही। लोगों और समाज ने मुझे अपनी भेड़ चाल में घसीट लिया। मैं भी मानने लगा कि रोज तुमको याद नहीं किया तो तुम नाराज़ हो जाओगे, एकादशी के व्रत से तुम खुश हो जाते हो, सोमवार के व्रत से अच्छा जीवनसाथी दिलवाओगे। अगर मंगलवार या गुरुवार को कोई अंडा या मांस खा ले तो तुम एकदम भड़क जाते हो। मम्मी तीज या करवा चौथ के दिन बिना खाना-पानी के रहें तो तुम पापा की उम्र बढ़ा देते हो। और अगर गलती से मम्मी ने पानी पी लिया तो शायद पापा को.... नहीं नहीं, मम्मी पानी नहीं पिएंगी।

उसी उम्र के दौरान या थोड़े बड़े होने पर पता चला कि तुमने तो अलग अलग नियम बना रखे हैं। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो साल भर अंडा मांस खाते हैं पर तुम उनसे नाराज नहीं होते। कुछ लोग बस दिन भर बिना पानी का रोजा रख लेते हैं तो तुम उनसे खुश हो जाते हो। तुम्हारे नाम भी अलग अलग हैं, गुण भी अलग अलग हैं। कुछ लोग कहते थे कि तुम भी अलग अलग ही हो।

ये सब एकदम नया था और मन मानने को तैयार नहीं था, लेकिन कुछ तुम्हारे डर से, कुछ अपने स्वार्थ से और कुछ सबकी देखा देखी, मैं भी वही करने और मानने लगा जो सब करते और मानते थे। विश्वास यह तब भी उतना ही था कि तुम हो। चाहे तुम्हारे नियम कितने भी अटपटे लगें पर तुम हो तो जरुर। लेकिन अब, अब वो बात नहीं रही। अब तो मन में कई बार सवाल आ जाता है की क्या तुम हो भगवान या कहें कि क्या तुम सचमुच नहीं हो भगवान। यह मन तुमसे अब भी डरता है, यह सवाल करने से भी डरता है कि कहीं तुम बुरा न मान जाओ। लेकिन उस डर से भी बड़ा डर पता है क्या है, ये, कि कहीं तुम सच में ना हुए तो?

और कई सारे कारण मिलकर इस डर को बढ़ाने में लगे हुए हैं। इसमें चार्वाक के दर्शन को मानने वाले हैं जो कहते हैं, न स्वर्गो नापवर्गो वा, नैव आत्मा पारलौकिकः अर्थात् न कहीं स्वर्ग है न कोई मोक्ष, न कोई विशिष्ट आत्मा है और ना परलोक। इनके अनुसार स्थाई या अनश्वर कहे जाने वाले किसी आत्मा, परमात्मा आदि का प्रत्यक्ष नहीं होता इसलिए इनका अस्तित्व नहीं माना जा सकता। विश्व चार तत्वों का संघात है। जीवन और चेतना की उत्पत्ति भी चार महाभूतों के संयोजन से संयोगवश हो जाती है, जैसे कत्था, चूना आदि के संयोग से पान में लाल रंग पैदा हो जाता है, वैसे ही जड़ तत्वों में चैतन्य उत्पन्न होता है। बात तो इनकी भी ठीक लगती है, तुम कहीं दिखाई तो देते नहीं हो, ना ही तुम्हारी आवाज सुनाई देती है। तुम्हारी ये सारी मूर्तियां, मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारे तो हम इंसानों ने बनाए हैं। तुम तक प्रार्थना भी पता नहीं पहुंचती है या नहीं। कुछ एक बार को छोड़ दें तो अधिकतर जो मांगो वो तुम देते नहीं। पुराने ग्रंथो में कई जगह

लिखा है कि तुम आकाशवाणी करवा देते थे। आज कल तो वो भी नहीं होती कि पता चले कि कम से कम तुम्हारी हम पर दृष्टि तो है। कोई भी संकेत नहीं मिलता तुम्हारा। मनसा वाचा कर्मणा सिर्फ हम ही तुम्हारा ध्यान करते रहें? कभी, कहीं, किसी को कुछ तो संकेत देना तुम्हारा भी कर्तव्य है या नहीं?

अब चार्वाक मत को छोड़ दें तो बौद्ध दर्शन आता है जिनके तीन महत्वपूर्ण सिद्धांतों में से पहला ही है अनीश्वरवाद। बाकी दो हैं, अनात्मवाद और क्षणिकवाद। अनीश्वरवाद - बुद्ध ईश्वर की सत्ता नहीं मानते क्योंकि दुनिया प्रतीत्य समुत्पाद के नियम पर चलती है। प्रतीत्य समुत्पाद अर्थात् कारण कार्य श्रृंखला। इस श्रृंखला के कई चक्र हैं जिन्हें बारह अंगों में बांटा गया है। अतः इस ब्रह्माण्ड को कोई चलाने वाला नहीं है, ना ही कोई उत्पत्तिकर्ता क्योंकि उत्पत्ति कहने से अंत का भान होता है। तब ना कोई प्रारंभ है ना अंत। सुनने में इनका मत भी सही लगता है। आखिरकार जब सभी काम प्रकृति के नियमों के हिसाब से हो रहे हैं तो तुम क्या कर रहे हो?

कई लाख वर्षों से पृथ्वी है और अभी कई लाख वर्षों तक चलती रहेगी। सभ्यताएं और प्रजातियां पैदा होती और मिटती रहेंगी। मानव जिस तरह प्रकृति का विनाश कर रहा है, शायद कुछ सौ वर्षों में मानव सभ्यता मिट जाए। या कोई उल्कापिंड, ज्वालामुखी, भूकंप सभ्यता का नाश कर दे, जैसा शायद डायनासोरों के समय में हुआ था। परंतु पृथ्वी और प्रकृति जिंदा रहेंगे और नई प्रजातियां पैदा हो जाएंगी। ये प्राकृतिक चक्र चलता रहेगा, इसमें तुम कहां हो?

लगभग ऐसा ही कुछ जैन मतावलंबी भी मानते हैं। जैनियों का कहना है कि सृष्टि अथवा विश्व का संचालन करने के लिए ईश्वर जैसी किसी अलौकिक सत्ता की आवश्यकता नहीं है।

हालांकि, हमारे बहुत से ग्रन्थों जैसे पुराणों, वेदों, उपनिषदों, श्रीमदभागवतगीता, कुरान, बाइबिल आदि में तुम्हारे होने को स्वीकारा गया है। बहुत से ज्ञानियों जैसे श्री शंकरचार्य, याज्ञवाल्क्य, श्री रामानुजाचार्य, स्वामी रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, ईशा मसीह आदि ने तुम्हारे अस्तित्व का ना केवल समर्थन किया है बल्कि ज़ोर शोर से प्रचार प्रसार भी किया है। तथापि इन अनीश्वरवादियों ने मन में सवाल तो उठा ही दिये हैं। साथ ही कुछ महान लोग जिन्होने तुम्हारा अस्तित्व नकारा वो भी कुछ प्रभाव डालते ही हैं, जैसे भगत सिंह और स्टीफन हाकिंग।

स्टीफन हाकिंग से याद आया कि विज्ञान भी ऐसे बहुत से प्रमाण दे रहा है जो कहते हैं कि तुम नहीं हो। मैं और अधिकतर लोग यही मानते थे कि हमें और ब्रम्हाण्ड को बनाने वाले तुम ही हो। लेकिन श्री चार्ल्स डार्विन ने अपनी किताब "द ऑरिजिन ऑफ स्पीसीज़" में ये बता दिया कि हम तो प्रकृति के क्रमिक विकास से बने हैं। हम भी पहले एक कोशिकीय जीव थे, फिर बहुकोशिकीय, फिर रीढ़युक्त, फिर उभयचर, थलचर, कपि और फिर चेतना के विकास के बाद मानव बन गए। ये सब जीव की जिजीविषा और डीएनए द्वारा अपने गुण को आनुवांशिक तरीके से अपनी संतानों में स्थानांतरित करने के द्वारा हुआ। और वही प्रजाति ज्यादा फली-फूली जिसने अपने आपको परिस्थितियों के अनुसार बेहतर तरीके से ढाला और बाकी समाप्त हो गईं। इसीलिए हम होमो सैपियंस बच गए और 700 करोड़ के पार पहुँच गए जबकि निएण्डरथल और क्रोमैगनान जैसी प्रजातियाँ समाप्त हो गईं। इसमें तुम्हारा कोई योगदान तो विज्ञान नहीं मानता।

विज्ञान एक प्रकार से ठीक ही कहता है। आखिर तुमने हमें बनाया होता तो तुम तो अपने सभी बच्चों से प्यार करते और निएण्डरथल जैसी बाकी प्रजातियों का खात्मा होने से रोकते ना। लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

अब ब्रम्हाण्ड के बनने की बात। आज से लगभग चौदह अरब साल पहले एक बहुत बड़ा विस्फोट हुआ था जिससे यह ब्रम्हाण्ड बना। उससे पहले यह ब्रम्हाण्ड केवल एक बिन्दु के बराबर था। उसी विस्फोट के समय ब्रम्हाण्ड फैला और अभी भी फैलता जा रहा है। उस समय जो ऊर्जा उत्पन्न हुई थी वही ऊर्जा तारों और ग्रहों के बनने में सहायक हुई। इस तरह से ब्रम्हाण्ड के बनने में भी तुम्हारा योगदान कुछ खास दिखता नहीं है। सभी पदार्थ भी न्यूट्रान, प्रोटान और इलेक्ट्रान से बने अणुओं से बने हैं। इस तरह

से विज्ञान ने कभी यह नहीं कहा कि तुम नहीं हो। आइंस्टीन ने कहा था कि वह तुमको यानि ईश्वर को नहीं नकार सकते लेकिन विज्ञान लगभग हर उस प्रश्न का जवाब ढूँढता जा रहा है जो मैं और बाकी लोग मानते थे कि ये तुमने किया है।

और विज्ञान को छोड़ भी दें तो आज की दुनिया देखी है? आज की दुनिया, समाज देखकर तो नहीं लगता कि तुम कहीं हो। कैसे मान लूँ कि तुम्हारा बनाया समाज, तुम्हारी बनाई दुनिया जब चीत्कार कर रही है तो तुम कहीं सुखनिद्रा में लीन हो। कैसे विश्वास कर लूँ कि तुम कर्मों के हिसाब से फल देते हो जब एक छः साल की मासूम बच्ची की बलात्कार के बाद नृशंस हत्या कर दी जाती है। जब एक परमाणु बम पूरे शहर को नष्ट कर रहा था तो क्या वो धमाका भी तुम्हारी निद्रा तोड़ नहीं पाया? जब तुम्हारे नाम पर तुम्हारे बच्चे एक दूसरे की लाशें गिराते हैं तो कैसे तुम हस्तक्षेप किए बिना रह पाते हो? तुम श्रीमदभागवतगीता में कहते हो, "अहं सर्वस्य प्रभवो, मत्तः सर्वं प्रवर्तते, इति मत्वा भजन्ते माम, बुधा भावो समन्विता" अर्थात मैं सारे संसार का मूल कारण हूँ और मुझसे ही सारा संसार प्रवृत्त हो रहा है अर्थात चेष्टा कर रहा है। ऐसा मुझे मानकर मुझमें ही श्रद्धा प्रेम रखते हुए बुद्धिमान भक्त मेरा ही भजन करते हैं, सब प्रकार से मेरे ही शरण होते हैं। तो कैसे तुम इंसानों को युद्ध, दंगे की तरफ प्रवृत्त होने देते हो? ये सब देखकर तो यही लगता है या तो हम तुम्हारे बच्चे नहीं मनोरंजन का साधन हैं और हमें लड़ता मरता देखकर तुम्हें आनंद आता है, या तुम हमें बनाकर भूल गए हो और या तुम हो ही नहीं। ये सिर्फ मैं ही नहीं कह रहा, तुम्हारे पुत्र ईशा मसीह ने खुद पूछा था तुमसे, "माइ गॉड, माइ गॉड, वाइ हैव यू फॉरसेकेन मी?" यानि मेरे ईश्वर तुमने मुझे क्यों छोड़ दिया है। बोलो ना, क्या तुम हो भगवान?

मानव जाग्रत चेतना का प्राणी है और उत्सुकता मानव के स्वभाव में है। तो मेरे मन में जब ये इतने तरह के सवाल झंझावात की तरह घुमड़ रहे होते हैं तो मैं शांत होने के लिए जवाब ढूँढने निकलना चाहता हूँ। परंतु यहाँ दिक्कत इस बात की है कि मैं जितना जवाब ढूँढने जाता हूँ उतना ही सवालों के घेरे में आ जाता हूँ। हो सकता है कि ये मेरी आस्था हो जो कि तमाम प्रश्न उन प्रश्नों पर उठाते हैं जो कहते हैं कि तुम नहीं हो। मेरा मन चार्वाक से सवाल करता है कि जब चार महाभूतों के संयोग से जब चेतना उत्पन्न होती है तो सभी की चेतना अलग-अलग क्यों होती हैं? या उस संयोग को कराने वाला कारक क्या है? क्या वो कारक तुम ही हो?

मेरा मन बौद्ध से सवाल करता है कि उत्पत्ति की बात तो बिग बैंग या महाविस्फोट की अवधारणा से सिद्ध हो ही गई है, फिर तो उत्पत्तिकर्ता होना चाहिए ना। कहाँ है वह? कौन है वह? फिर स्वामी विवेकानंद और श्री रामकृष्ण परमहंस जैसों ने तो तुम्हारा साक्षात्कार भी किया है। इतने महापुरुष क्या भ्रम में थे? और विज्ञान? वो तो अभी खुद खोज में है। डार्विन के सिद्धांतों की परीक्षा भी ली जा चुकी है जिसमें एक वैज्ञानिक कई पीढ़ी तक चूहों की पूंछ काटते रहे लेकिन फिर भी कोई बिना पूंछ वाला चूहा पैदा नहीं हुआ। साथ ही जब डार्विन ये कहते हैं कि "Only fittest will survive या Survival of the fittest" यानि सबसे योग्य ही बचे रहेंगे तो कई सारी प्रजातियाँ हैं जो बची तो हैं यानि सर्वाइव कर रही हैं लेकिन उनमें चेतना का विकास हमारी तरह नहीं हुआ। जबकि कुछ प्रजातियों के दिमाग और शरीर के वजन का अनुपात लगभग हमारे बराबर होता है। आखिर ऐसा क्यों हुआ? इसका जवाब विज्ञान के पास नहीं है।

जब सभी पदार्थ परमाणु से और सभी परमाणु न्यूट्रान, प्रोटान और इलेक्ट्रान से बने हैं तो सभी पदार्थों के गुणधर्म अलग-अलग क्यों होते हैं ? यहाँ तक कि एक तरह के गुणधर्म वाले पदार्थ भी अलग-अलग तरह के होते हैं, जैसे मानव के फ़िंगरप्रिंट्स, ज़ेबरा की धारियाँ, फलों का स्वाद आदि।

जब ब्रम्हाण्ड एक बिन्दु के बराबर था तो उसमें विस्फोट हुआ कैसे? उस बिन्दु का ही निर्माण कैसे हुआ? विज्ञान अधिकतर "क्या" का जवाब तो दे देता है लेकिन बहुत से "क्यों" और "कैसे" अनुत्तरित रह जाते हैं। सामाजिक और दुनिया की स्थिति देखकर दुख तो होता है परंतु ढूँढने पर उसमें भी अच्छाई मिल ही जाती है। कभी कोई अपनी जान देकर दूसरों की जान

बचा लेता है, कभी कोई अपनी एक रोटी में से आधी किसी से बाँट लेता है। अपना बोझ दूसरे पर डालने वाले लोग हैं तो दूसरों की पीड़ा खुद लेने वाले भी हैं।

घुप्प अँधेरों में जब कोई किरण फूटती है तो लगता है कि कहीं तो हो तुम। तुम्हारे होने, न होने, इन अच्छाई-बुराई, चार्वाक, शंकर, बुद्ध, रामानुज, डार्विन, विवेकानन्द में घूम-घूमकर मेरी चेतना थक जाती है और कभी निर्धारित कर नहीं पाती कि तुम हो या नहीं। उस समय मेरी आस्था सामने आ जाती है और वो कहती है कि तुम हो। चाहे तुम सो रहे हो या जान-बूझ कर हमारी अनदेखी कर रहे हो, चाहे तुम सर्वसामर्थ्यवान हो या सामर्थ्यविहीन हो चुके हो, चाहे तुम इस सृष्टि का संहार करना चाहते हो या एक नई सृष्टि की रचना, चाहे तुम बिन्दु में हो या सर्वव्यापी, चाहे तुम भीतर हो या बाहर पर तुम हो जरूर।

इसलिए मैंने यह तय किया है कि यदि चेतना, ज्ञान-विज्ञान यह तय नहीं कर पा रहे कि तुम हो या नहीं तो मैं आस्था की सुनूंगा। मैं मानता रहूँगा कि तुम हो, मैं खुद को बेहतर बनाऊँगा और तुमको ढूँढता रहूँगा। कर्मकांडो में नहीं, सिर्फ कर्म में। मनावमात्र में ही नहीं, जीवमात्र में। मुझे खुद को और इस दुनिया को बेहतर बनाने के लिए तुम्हारी आवश्यकता क्यों हो भला? आखिर इसीलिए तो तुमने मुझे और हम सबको चेतना दी है। और शायद यही तुम्हारी हमसे अपेक्षा थी जब तुमने हमें चेतना दी थी कि इसका उपयोग हम सिर्फ उपभोग और विध्वंस में नहीं करेंगे बल्कि दुनिया को बेहतर बनाने में करेंगे। इसलिए मैं प्रण करता हूँ कि तुमको याद रखते हुए खुद को बेहतर बनाऊँगा और दूसरों की सहायता करूंगा। जिससे उन्हें ये दुनिया एक बेहतर स्थान लग सके। शायद मेरे ही माध्यम से उन्हे यह अनुभूति हो जाए कि तुम हो और शायद उनके माध्यम से मुझे।

है ना?

ये "हाँ" किसने बोला? ऐसा लगा जैसे मेरे भीतर से कोई आवाज गूंज कर मेरे प्रश्न का जवाब दे रही हो।

कौन बोला ये?

क्या तुम हो भगवान??

मातृभाषा के मनोभाव

तुम्हारे मन के हर भाव को हूं
शब्द देने में समर्थ,
अपने अज्ञान का मुझको,
क्यू दोष देता है व्यर्थ,

एक शब्द और भाव अनेक,
यही तो है खूबी मेरी,
मन के हर कोमल भाव को,
सब से पहले देती अर्थ,

प्रथम शब्द बोला था मेरा,
लेकिन फिर भूला मुझे,
जीवन की कश्मकश में,
निर्णय के देती मैं शब्द,

हर शब्द में एक भाव,
है एक भाव में सारे अर्थ,
भूलकर तू अपनी भाषा,
क्यूं कर रहा संस्कृति व्यर्थ,

दूसरों का भले कर सम्मान,
मातृभाषा का ना कर त्याग,
मनोभावों का महत्व भी है,
आजीविका के ही समान ।

अमित चौहान
विपणन प्रबंधक
चण्डीगढ़ अंचल
बैंक ऑफ इंडिया

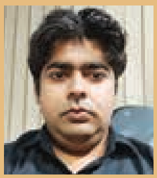

सर पर हाथ

रवि रंजन दुबे
स्टाफ लिपिक
जीजीएसई इंजीनियरिंग कॉलेज रोड शाखा
बोकारो अंचल

बचपन पूरे ऐशो आराम और मस्ती भरी जिन्दगी के साथ पूरे सूकुन से गुजरा, क्योंकि माता-पिता का हाथ सर पर था। 18 वर्ष की उम्र तक न कोई चिन्ता और न ही कोई गम। क्योंकि माता-पिता का हाथ सर पर था। आज 50 वर्ष की उम्र में जब भी पीछे मुड़ कर देखता हूँ तो मन में एक खयाल आता है कि काश जिन्दगी बचपन में एक बार फिर से लेकर चलती। और उसकी भी वजह एक ही है कि 'सर पर हाथ' था। 18 वर्ष की उम्र के बाद जब फौज में गया तो रिटायरमेंट तक कोई चिन्ता नहीं, क्योंकि सर पर हाथ फौज का था। फौज की जिन्दगी जीवन और मृत्यु के बीच आँख-मिचौली खेलते हुए बीतती है जिस कारण जीने का तरीका भी आम आदमी से अलग हो जाता है। हर दिन को अपना आखिरी दिन, हर रात को अपनी आखिरी रात समझ कर जीवन मौज-मस्ती और परिवार की खुशी में जीने का मकसद बन जाता है। कल की चिन्ता ही नहीं रहती थी। वक्त तो अच्छी तरह बीतना ही था, क्योंकि सर पर हाथ फौज का था। मगर हर दिन आखिरी नहीं था, और हर रात भी आखिरी नहीं थी। और फिर अगली इनिंग शुरु हो जाती है रिटायरमेंट के बाद।

समाज के बीच आते ही समाज में जीने का तरीका तो बिलकुल ही अलग-थलग निकला। न कोई अपना और न ही कोई पराया। न ही कोई छोड़ेगा और न ही कोई साथ देगा। बस जो भी करना है अकेले ही करना है। एक बड़े मुश्किल सफर की शुरुआत होती है। उम्र भी 40 की और सर पर हाथ भी किसी का नहीं। अपने आप को असहाय महसूस करने लगा। क्योंकि पूरी जवानी तो फौज में बीत गई। समाज में कैसे जीना है, यह तो सीखा ही नहीं। और सर पर बोझ पहाड़ जैसा। बचत तो कभी की नहीं और नौकरी से रिटायर भी हो गए। परिवार के लिए छत, बच्चों की हायर एजूकेशन शुरू, शादी-ब्याह और खुद की उम्र बुढ़ापे की ओर कदम बढ़ा चुकी है। बुढ़ापा तो अपने आप में ही एक बीमारी है। इन सभी से लड़ने के लिए निकल पड़े नौकरी की तलाश में। प्राइवेट कंपनी, इंडस्ट्रीज, दुकान, प्राइवेट अंगरक्षक, इंश्योरेंस कंपनियां, सब जगह का थोड़ा-थोड़ा तजुर्बा लेकर जब किस्मत ने मुझे बैंक की नौकरी दी तो आज मैं भगवान का शुक्रगुजार हूँ कि उन्होंने फिर से मेरे सर पर हाथ रख दिया और मुझे बैंक में नौकरी दी। मन जो कि काफी अशांत था, वह भी धीरे-धीरे शांत होता चला गया। बैंक ने ज्वाइन करते ही पे-स्केल फिटमेंट कर हमें एक उचित पगार देना शुरू किया और मेरे देश सेवा करने का उचित मान-सम्मान दिया जो कि समाज के दूसरे किसी भी संस्थान में शायद नहीं मिलता। इस ढलती उम्र में आकस्मिक दुर्घटना एवं मृत्यु का डर अक्सर लगा रहता था कि हमारे बाद हमारे परिवार की देखभाल कौन करेगा। बैंक में हमारे बाद हमारे आश्रित को नौकरी देने के प्रावधान ने इस चिन्ता से भी मुक्त कर दिया। फौज की जिन्दगी में घर बनाने के बारे में कभी सोचा ही नहीं और आज जब घर की जरूरत महसूस हुई तो सर के ऊपर छत भी हमारे बैंक ने होम लोन देकर पूरी कर दी। ढलती उम्र के साथ बीमारियों का आना-जाना लगा रहता है, इस स्थिति से निबटने के लिए इलाज की सुविधा, उसमें भी कैशलेस इलाज की सुविधा मेरे लिए तो है ही, मेरे पूरे परिवार के लिए भी बैंक ने मुहैया करा रखी है। कैसे शुक्रिया करूँ मैं अपने बैंक का, जिसने जिन्दगी के मुश्किल दौर में फिर से एक बार सर पर हाथ रख दिया। ऐसा महसूस होता है कि साक्षात शिव शंकर भोले ने हमारे सर पर हाथ रख दिया हो। जिस लगन और मेहनत से हम बैंक में सेवा देते हैं, उसी लगन के साथ बैंक द्वारा भी हमें अपने परिवार का अंग समझ कर तोहफे में 15 दिनों का पी.एल. आई. का भुगतान किया जाता है। इस उदार रवैये ने तो मन ही मोह लिया। जो हमारे सहकर्मी कम ही उम्र में बैंक जवाइन किए हैं, जिन्होंने अभी बाहर की दुनिया उतनी अच्छी तरह से नहीं देखी है, वे शायद मेरे इस एहसास को अच्छी तरह से नहीं समझ सकते। और अंत में फिर एक बार मैं कहना चाहूँगा कि हम सब खुशकिस्मत हैं कि हमारे सर पर बैंक का हाथ है।

उम्मीद ....

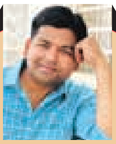

सचिन भास्कर
वरिष्ठ प्रबंधक
विपणन विभाग
आगरा आंचलिक कार्यालय

मैं रुका, झुका और थोड़ा थका हुआ हूं ,
मगर टूटा तो नहीं ...
मैं फिर रौब से उठूंगा,
उसी तेजी से दौड़ूंगा और एक दिन झंडे गाड़ के लौटूंगा !

जी हां साथियों यह आवाज़ है आप सबके दिल की जो कहीं ना कहीं एक उम्मीद को दर्शाती है। मैं सिर्फ एक ज़रिया मात्र हूं अगर आपके अंदर छिपी चिंगारी को हवा दे पाया तो शायद यह मेरी बहुत बड़ी उपलब्धि होगी।

एक उम्मीद आपके मां-बाप ने आपसे लगाई थी मेरे बच्चे की सरकारी नौकरी हो जाए। विश्वास मानिए उनकी उम्मीदों पर खरे उतरे हैं आप ।

फिर अब ऐसा क्या हुआ जो आप उम्मीद खोते जा रहे हैं ?

जिज्ञासा कम होती जा रही है ।

क्या है ऐसा जो आपको कुछ नया करने से रोक रहा है ?

कहां गई वह कुछ कर गुजरने की क्षमता ?

जिम्मेदारियों के बोझ तले अपने हौसलों के पंख को क्यों कुचल रहे हैं ?

उम्मीद वो आग है जो हमारे दिल में जलती है, हमें सोचने पर मजबूर करती है कि क्या संभव है और हमारे सपने कैसे हकीकत में बदल सकते हैं। उम्मीद एक शक्ति है जो हमें जीवन में आगे बढ़ने का साहस और स्थायिता देती है। यह वह आवाज है जो हमें हर मुश्किल का सामना करने का साहस देती है।

उम्मीद विश्वास का प्रतीक है, वो सार्थक मंजिल की ओर एक प्रेरणा स्रोत के रूप में कार्य करती है। यह एक शक्ति है जो हमें अपने सपनों को पूरा करने के लिए मुख्यत: दिशा प्रदान करती है। उम्मीद एक बारीकी से नहीं, बल्कि साहस और आत्म-संघर्ष के माध्यम से अपनी मानविक शक्तियों को साकार करने का जरिया हो सकती है। उम्मीद हमारे जीवन में रोशनी और गर्मी का स्रोत होती है, जो हमें सामर्थ्य और साहस के साथ आगे बढ़ने की ओर प्रोत्साहित करती है। इसलिए, जब जिन्दगी आपको प्रतिस्पर्धाओं और बाधाओं से घेर लेती है, तो याद रखें, उम्मीद हमारे साथ है और हम किसी भी मुश्किल को पार कर सकते हैं।

उम्मीद के बिना, जीवन में सफलता पाना असंभव सा लगता है। यह हमें दुनिया के अच्छे और बुरे पहलुओं को देखने की क्षमता प्रदान करती है और हमारे लिए संघर्ष का माध्यम बनती है। जब हम उम्मीद रखते हैं, तो हम सकारात्मक रूप से सोचने लगते हैं और बड़े सपनों को पूरा करने के लिए कठिनाइयों का सामना करने के लिए तैयार होते हैं। जब कोई उम्मीद से बढ़कर कुछ करता है, तो वो दूसरों के लिए भी प्रेरणा स्रोत बनता है। उम्मीद और संघर्ष की कहानियां हमें यह सिखाती हैं कि कोई भी लक्ष्य हासिल कर सकता है, अगर वह उसमें समर्पित है और कभी हारने का विचार नहीं करता।

इसलिए, जब भी आपको किसी बड़े या छोटे लक्ष्य को पूरा करने की जरूरत होती है, तो उम्मीद को अपने साथ रखें और सफलता की दिशा में कदम बढ़ाएं। उम्मीद हमारे जीवन को रंगीनी और खुशियों से भर देती है, और हमें बेहतर दिनों की ओर आगे बढ़ने का साहस देती है।

उम्मीद वाले लोग आमतौर पर अधिक सकारात्मक और स्थिर होते हैं। वे अपने लक्ष्यों के प्रति पूरी तरह से समर्पित रहते हैं और विफलता के बावजूद नहीं हारते। उम्मीद वाले व्यक्तियों के लिए चुनौतियां मात्र एक मौका होती हैं, जिन्हें वे पार कर सकते हैं। उम्मीद के बिना, जीवन अधूरा होता है। यह एक आत्मविश्वास

और साहस की भावना है जो हमें उच्च उद्देश्यों की ओर बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करती है।

उम्मीद हमें यह याद दिलाती है कि चुनौतियों के बावजूद हम कुछ भी हसील कर सकते हैं, और हमारे अंतर्निहित संवेदनाओं का महत्व होता है। इसलिए, जब भी आप असफलता का सामना करते हैं, तो उम्मीद को नष्ट नहीं करें, बल्कि उसे मजबूत करें, क्योंकि उम्मीद ही हमारे सपनों की पहचान की कुंजी होती है।

आखरी बात यदि आप उम्मीद से भरपूर होते हैं तो आप खुद को और अपने जीवन को निर्मित कर सकते हैं । उम्मीद एक आदर्श है जो हमें सपनों की पूर्ति की ओर बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता है और यह हमें अपने जीवन को संवारने का एक बेहद महत्वपूर्ण और सुंदर तरीका प्रदान करता है। उम्मीद एक आदर्श होना चाहिए जो हम अपने बच्चों को और आने वाली पीढ़ीयों को देते हैं ताकि वह उम्मीद के महत्व को समझें।

उम्मीद का सबसे बड़ा मार्गदर्शन हमारा खुद का दिल होता है जब हम अपने दिल की सुनते हैं और अपने सपनों का पीछा करते हैं तो हम अच्छे और सफल इंसान बन सकते हैं ।

हौसले के तरकश में
कोशिश का वो तीर ज़िंदा रखो,
हार जाओ चाहे जिंदगी में सब कुछ,
मगर फिर से जीतने की उम्मीद जिन्दा रखो!

मैं तुझे फिर मिलूंगी...

मैं तुझे फिर मिलूंगी...
तेरे अधरों पर खिलती हंसी बनकर
तेरी मुस्कान में मिलती ख़ुशी बनकर
तेरी चमकती आँखों के झरोखों से झांकती मैं,
झांककर फिर छुप जाती नमी बनकर
मैं तुझे फिर मिलूंगी.....
तुम्हारी छोटी-छोटी आँखों के बड़े-बड़े सपनों में
कभी अनजान रस्तों पर, कभी तेरे अपनों में
तेरी ऐनक की एक कोर पर बैठी मैं
सब कुछ तेरे संग देखा करूंगी
मैं तुझे फिर मिलूंगी...

तेरे हाथों की लकीरों में छुपकर कहीं
तेरे माथे की सलवट में सिमटी कहीं
तेरे आज में, तेरे कल में घुलती रहूंगी
जब चाहे तेरी हथेली से झांककर
तुझे मिलती रहूंगी
मैं तुझे फिर मिलूंगी...

कभी सूरज की पहली किरण बनकर
तेरी सुबह को खुशनुमा बनाती मैं
कभी चंदा की चांदनी बन फिर
तेरी नींद को सुकून दे जाती मैं
तो कभी क्षितिज के छोर पर लाली बन मिलूंगी
मैं तुझे फिर मिलूंगी...

एक अनछुई सी याद बनकर
तेरे जेहन में आती रहूंगी
एक अनकही सी बात बनकर
तुझसे बतियाती रहूंगी
तेरे ख्यालों में, तेरे हर विचार में

अनकिए सवालों में, जीत में, हार में
मैं तुझे फिर मिलूंगी...
मैं तुझे फिर मिलूंगी...

कंचन पंत
अधिकारी
फ़र्रूखाबाद शाखा
हरदोई अंचल

समय की चाहत

सुकन्या दत्ता
राजभाषा अधिकारी
राजभाषा विभाग
नासिक अंचल

"चाहत" बड़ी ही अजीब है यह चाहत बचपन से लेकर किशोरावस्था तक और किशोरावस्था से लेकर बुढ़ापे में मृत्यु शय्या तक कभी पीछा नहीं छोड़ती। हां इसके विषय समय के अनुरूप अवश्य बदलते रहते है ।

आज की कहानी भी इसी चाहत पर केंद्रित है। यह कहानी है पश्चिम बंगाल के विशाल क्षेत्र में बसी एक छोटी से गांव शिंदुरा की है। चलिए इस कहानी के सहायक पात्रों से मुख़ातिब होते हैं। जी हां, पाठकों को मुख्य पात्र से मिलाने से पूर्व इन सहायक पात्रों से रूबरू होना ज़रूरी है। इस कहानी का प्रथम सहायक पात्र, सुरेंद्र चौधुरी कहानी के मुख्य सहायक पात्र के बापी (पिताजी) हैं। इनके व्यक्तित्व के बारे में पहले से बता दूं कि यह जितना अल्पज्ञानी है उतना ही ऐश्वर्यवान। वैसे तो धन-संपन्नता अधिक होने के कारण उनका कोई निजी अनुभव नहीं था। परंतु हां, अपने पिता के अनुभवों तथा दिखाए गए रास्तों को उन्होनें अपने जीवन का आधार ज़रूर बना लिया था, जो इतना मजबूत था कि अगर पिताजी ने कह दिया कि सूर्य उत्तर से उदय होता है तो स्वयं सूर्यदेव से भिड़ जाएंगे कि आज आपका उदय गलत दिशा से हुआ है।

कहानी की दूसरी सहायक पात्र, चौधुरी जी की पत्नी दुर्गा चौधुरी, पूरी गौ, कुछ स्वभाव से तो कुछ परिस्थितिवश। पढ़ाई में तेज बुद्धिमान होने के बावजूद सिर्फ दसवीं कक्षा तक ही पढ़ाई की क्योंकि ग्यारहवी कक्षा तक पहुंचते-पहुंचते उसके माँ-बाप दोनों गुज़र गए और उसके पढ़ने की चाहत में ग्रहण लग गया। इस दुर्गम परिस्थिति में भानु चौधुरी ने सहारा दिया और उसे अपनी कुलवधू बनाया, ओह क्षमा कीजिए भानु चौधुरी कोई और नहीं बल्कि सुरेंद्र चौधुरी के पिता और इस कहानी के एक सहायक पात्र हैं।

घाट-घाट का पानी तो चौधुरी जी ने पिया ही हुआ था। उनको पता था कि उनका बेटा जैसा बैलबुद्धि है, उनके नक़्शे कदम पर अभी तो चल रहा है, परंतु भविष्य में भी चलेगा इसकी कोई गारंटी नहीं है, अब ऐसे में अगर ऐसी कन्या से उसका विवाह हो जाता है जो बुद्धिमान तो है परंतु अपनी बुद्धिमत्ता का प्रयोग उसे बुरे वक्त में सहारा देने वाले इंसान के ख़िलाफ कभी नहीं करेगी बल्कि वक्त आने पर घर-गृहस्थी बांधकर रखे। तो इन परिस्थितियों में सुरेंद्र और दुर्गा की शादी हुई ।

अब धीरे-धीरे बढ़ते हैं इस कहानी के मुख्य सहायक पात्र की ओर, जी हाँ, सुनने में ज़रा अटपटा सा लगा न "मुख्य सहायक पात्र", लेकिन उस पात्र की इससे सरल व्याख्या क्या करें कि आगे चलकर इसके चारों तरफ़ ही यह कहानी घूमेगी। तो इस सोची समझी शादी से जन्मा एक बाई-प्रोडक्ट(प्रतिफल) देबेन्द्र चौधुरी, इस नामकरण का किस्सा भी बहुत मनोरंजक है।

पुत्र प्राप्ति के लिए आठ साल तक चौधुरी खानदान ने कई पापड़ बेले कभी किसी मंदिर में फूल चढ़ाएं, तो कभी किसी मस्जिद में चादर, कभी कोई जादू-टोना करवाया तो कभी झाड़-फूक। इस सफ़र की चंद राहों के मुसाफ़िर थे भानु चौधुरी। धीरे-धीरे हिंदी का सफर कब अंग्रेज़ी के सफ़र में बदल गया पता ही न चला। चौधुरी जी भी भगवान को प्यारे हो गए। उनके गुज़रने के कुछ महीनों बाद ही देबेन्द्र पैदा हुआ। परिवार तो श्रद्धा के भँवर से गुज़र ही रहा था कि बाक़ी की कसर रिश्तेदारों ने पूरी कर दी जब सबके मुख पे एक ही बात थी कि पुत्र के शकल में भानु चौधुरी

वापस आया है। तो बस फिर क्या था, नाम हुआ देबेन्द्र (देवताओं के राजा) चौधुरी, भगवान का प्रसाद और चौधुरी खानदान के आंख का तारा, मां का दुलारा देबू और आगे चलकर कॉलेज के दोस्तों में 'डी'। चलिए हम भी उसे देबू नाम से ही बुलाएंगे। जो अति पुरातन 'देबेन्द्र' और अति आधुनिक 'डी' के मध्य है।

माँ-बाप की चाहते थे कि देबू पढ़-लिखकर एक दिन बहुत बड़ा डॉक्टर बनेगा और निःशुल्क गांव वालों का इलाज करेगा, परंतु जैसे अधिक मीठा मधुमेह (डायबिटीज) का कारण बन जाता है वैसे ही अधिक लाड़ भी बच्चों के बिगड़ने की वजह बन जाता है। तो हुआ यूं एक साल तीसरी कक्षा में, दो साल छठी कक्षा और तीन सालों से दसवीं कक्षा पास करने के निरंतर प्रयास में देबू को डॉक्टर बनते देखने की चाह कहीं ओझिल होती जा रही थी। हालाकि उसके पास इस असफलता का तर्क भी अनोखा था। उसके अनुसार स्कूल को कोई भी विषय पढ़ाने में जल्दबाज़ी नहीं करनी चाहिए, एक परिपक्व डॉक्टर बनने के लिए प्रत्येक विषय की गहन जानकारी ज़रूरी है, और कहते है ना कि तर्क कितना भी खोखला क्यों न हो जेब अगर भरी हुई है तो सभी तर्क वाज़िब जान पड़ते है। उसने इसी क्रम में बारहवीं कक्षा भी पास कर ली। अजी चौकिए मत दिमाग नहीं तो कम से कम चौधुरी खानदान का ठप्पां तो उसके पास था ही और जब बाप स्कूल का ट्रस्टी हो तो कोई भी चाहत पूरा करना नामुमकिन नहीं होता।

बारहवीं के बाद किसी तरह गिरते पड़ते एक गैर-सरकारी मेडिकल कॉलेज में देबू का दाखिला हो गया। कॉलेज गांव से कई मील दूर कोलकाता (कलकत्ता) शहर में था। रहने-खाने के लिए एक हॉस्टल का भी बंदोबस्त किया गया। यहां पर पाठकों को यह बताना आवश्यक है कि इस सबके के पीछे अब तक जितना पैसा खर्च हुआ, उतने में दो लोगों को डॉक्टर बनाया जा सकता था। परंतु आम लोगों से देबू की तुलना नहीं हो सकती। बाप को पता था कि बेटा अगर डॉक्टर बन गया तो उनकी सारी चाहत पूरी हो सकती है। भले वो चाहत ख्याति की हो या दुगनी आमदनी की। पर समय की चाहत कुछ और ही थी।

बड़े शहर, बड़े कॉलेज की चकाचौंध में देबू ग्रामीण परिपाटी छोड़कर शहरी हो गया । उसे सबसे ज्यादा प्रभावित वहां के निवासियों ने किया, जिस देबू ने लड़कियों को हमेशा घर के काम-काज में ही डूबा हुआ देखा था तथा लड़कियां कम पढ़ी-लिखी ही अच्छी होती हैं, ऐसी मानसिकता से आया था, उसके लिए कॉलेज में इतनी सारी महिलाओं को पढ़ते हुए देखना किसी आश्चर्य से कम नहीं था। अब धीरे-धीरे उसे अपने गांव के रीति-रिवाजों, विचारधारा से घृणा सी होने लगी। इन लड़कियों से बातचीत करके उसे लगा कि लड़कियां भी कई पैमानों पर लड़कों के समान हो सकती हैं तथा सिर्फ घर की सजावट के लिए नहीं हैं। आधुनिक विचारधारा की तरफ कुछ इस प्रकार बढ़ा कि इन लड़कियों में ही उसने अपनी अर्धांगिनी ढूंढना शुरू कर दिया।

भगवान और भाग्य की भी अजीब महिमा है जब देता है तो छप्पर फाड़के देता है। उसने एक अर्धांगिनी चाही थी पर कई मिल गई। परंतु वह था बड़ा भावुक सिद्धांतवादी बहकते-लड़खड़ाते भी उसने अंततः एक सुकुमारी को अपनी जीवनसंगिनी के रूप में चुन ही लिया। प्रियंका रॉय एमबीबीएस फाइनल वर्ष की छात्रा सुन्दरता में भले ही कम परंतु ज्ञान,बुद्धि एवं स्वाभिमान में सौ में से सौ, उसके इसी गुणों पर देबू सबसे अधिक मरता था। इन गुणों के साथ उसकी एक और ख़ासियत थी रॉय एस्टेट की एक लोती वारिस होना। अब इन दोनों की प्रेम कहानी चल पड़ी। इस इश्क़ का फितूर इतना चढ़ा की देबू माँ-बाप को याद करना भी भूल गया। पहले कॉल पर जो बातचीत हर दिन होती थी, अब कभी-कभी होने लगी। यहां तक कि मां-बाप समझ लेते है कि शायद बरख़ुरदार पढाई में मग्न है,परंतु प्रथम वर्ष फेल होने के बाद जब घर पर कॉलेज के डीन का कॉल आया तब कलई खुली ।

बेटे को डाट-फटकारकर चौधुरी जी वापस घर तो ले आए, परंतु प्रियंका को उससे दूर करना बड़ा कठीन जान पड़ता था। अंततः जब रोने-धोने से भी कोई काम नहीं बना, तो बेटे की जिद्द के आगे हथियार डालने पड़े। उधर प्रियंका भी अपने दिल से उसे निकाल नहीं पाई। इन दोनों की चाहत में बस दायित्व बोध का

ही अंतर था, जहां शुरू से बेपरवाह देबू को अपने दायित्व बोध की चिंता न थी, वही प्रियंका अमीर होते हुए भी अपने दायित्व के प्रति सजग थी ।

खैर अब समय आ गया जब अपने बेटे की हालत और वास्तविक परिस्थितियों को देखते हुए दोनों परिवारों के मेल-मिलाप के लिए चौधुरी परिवार, रॉय परिवार से मिलने कलकत्ता शहर आए। धन-संपत्ति में तो रॉय खानदान चौधुरी खानदान से ऊपर था यह तो सुरेंद्र और दुर्गा समझ गए, परंतु उनके मन में प्रश्न यह था की क्या पढ़ी-लिखी रईस परिवार की बेटी दब कर रहेगी। जब प्रियंका आई तब देबू और उसके माँ-बाप दोनों का दिल धड़का, बस धड़कने की वजह अलग थी । जहां देबू का दिल अपने प्रियसी को देखकर धड़का वहीं उसके माँ-बाप का दिल उसके चेहरे पर चढाई गई चश्मे एवं अधिक पढ़ाई के कारण आखों के नीचे काले धब्बे और हलकी सी फीकी शकल को देखकर धड़का। बातचीत शुरू हुई जो अंत तक पहुंचते- पहुंचते दोनों परिवारों को यह अंदेशा दे गई कि यह विवाह नहीं हो पाएगा।

घर लौटकर माँ-बाप का संताप पुनः शुरू हो गया। लड़ाई-झगड़े की पूरी गाथा पाठकों को यहां बताना जायज़ नहीं है इसलिए संक्षिप्त में माँ द्वारा छोड़े गए उस ब्रह्मास्त्र का ही ज़िक्र करूँगी जिसके बाद बहुत कुछ बदल गया।

माँ - " मैंने तेरे लिए आज तक सब कुछ सहा है देबू भगवान ने आज तक बस मुझसे छीना ही है। क्या तू इन आखरी दिनों में मेरी एक इच्छा भी पूरी नहीं करेगा? तू मेरा मरा हुआ मुहं देखेगा, अगर तूने उससे शादी की तो।"

बस फिर क्या था, यह सुनकर देबू गाड़ी लेकर निकल गया फोन पर प्रियंका से बात करते हुए, रोते हुए, अपने कभी ना पूरे होने वाले वादों के लिए ग्लानी करते हुए और उसी समय रास्ता काटती इस कहानी के मुख्य पात्र बिल्ली को बचाने के चक्कर में उसका संतुलन बिगड़ा और वह सड़क के किनारे लैंप पोस्ट से जा टकराया। जी हां, कहानी का मुख्य पात्र यह बिल्ली ही है, क्यों, यह आगे पता चलेगा, आइए अब आगे बढ़ते हैं।

देबू की आखें जब खुली तो उसके सामने एक शर्ट पैन्ट पहना आदमी खड़ा था कुछ आगे उसकी लेम्बोर्गिनी भी खड़ी थी। आस-पास देखा तो गांव बहुत पहले ही छोड़ आए थे। फ़िलहाल इस नए पात्र को आदमी कहकर ही संबोधित करते है ।

आदमी- "क्या हुआ? कहां से आ रहे हो? ज़्यादा लगी तो नहीं?"

देबू - "यहां पीछे शिंदुरा गांव है वही से आ रहा हूँ । लगी तो नहीं पर दर्द हो रहा है ।"

आदमी - "मैं यहाँ आता-जाता रहता हूँ यहीं आगे चलकर एक चाय की दुकान है वही बैठते हैं । तुम थोड़ा मुहं पर पानी मार लेना और कुछ खा-पी भी लेना ।"

देबू को भी किसी की ज़रूरत थी जिससे वह अपने मन की बात कह सके और किसी अंजान इंसान से बेहतर और कौन होगा जिसके साथ फिर कभी मुलाकात की संभावना न हो।

दोनों चाय की दुकान पर जा बैठे ।

आदमी - "दर्द कैसा है?"

देबू - "जलन और दर्द है शायद अंदरूनी चोट है।"

आदमी - "तुम चाहो तो मुझसे कह सकते हो पेशे से मैं एक मानसिक चिकित्सक हूँ। लोगों की बातें सुनकर उनका हल निकालना ही मेरा काम है ।"

बस यह सुनने की देरी थी और देबू ने रोते-रोते अपनी सारी व्यथा कह डाली।

आदमी - "हम्म तो तुमने क्या तय किया? क्या करोगे अब?"

देबू - "और मैं कर ही क्या सकता हूँ। पूरी ज़िंदगी मैंने अपने माँ-बाप को कष्ट ही दिया है। अब और नहीं।

"मैं तोड़ दूंगा, उससे रिश्ता, शायद वह मुझे कभी माफ़ ना करे पर क्या करूँ माँ-बाप की चाहत पूरी करना, मेरी खुद की

चाहत पूरी करने से कहीं अधिक ज़रूरी है। उनके मुझपर कई कर्ज़ हैं।"

आदमी - "अच्छा"

देबू - "क्या हुआ, बस अच्छा और तुम कुछ नहीं कहोगे?"

आदमी - "मेरा अब कुछ भी कहना व्यर्थ है जब तुमने रिश्तों को देना-पाओना (लेन-देन) के नज़रियें से समझ ही लिया है तो मैं और क्या कहूं?"

देबू - "देना-पाओना (लेन-देन) यह क्या कह रहे हो?"

आदमी - "तो और क्या? अगर माता-पिता के द्वारा निभाई गई ज़िम्मेदारी को तुम सिर्फ कर्ज़ के आधार पर तौल रहे हो तो यह लेन-देन ही है।"

"उन्होंने तुम्हारी परवरिश की, तुम्हे बड़ा किया आज तुम जो भी हो उनकी वजह से हो यह सब ज़िम्मेदारी नहीं तुम्हारे प्रति उनका प्रेम है।"

देबू - "तुम कहना क्या चाहते हो साफ़ शब्दों में कहो"

आदमी - "दोनों को मत छोड़ो"

"देखो! प्रियंका तुम्हें बहुत चाहती है इसमें कोई दोराय नहीं, इसलिए इतनी पढ़ी लिखी होकर भी उसने तुम्हारे परिवार के हर बात को हंसते-हंसते सुना।"

"और सच कहूं तो भगवान ने पैसे के अलावा तुम्हें और किसी भी चीज़ का मालिक नहीं बनाया पर प्रियंका के पास तो सब कुछ है जो किसी की चाहत होती है। और जहां तक बात रूपवती की है तो वो तो दुर्गा जी शायद भूल गई कि उनकी भी शादी के समय रुप नहीं था पर उसे इसलिए स्वीकारा गया था क्योंकि तुम्हारे दादा, भानु चौधुरी को पता था कि यही कम पढ़ी लिखी कन्या उनके रास्तों पर आंख बंद करके चलेगी। आज कुछ ऐसे ही अंधेपन की अपेक्षा तुमसे और प्रियंका से की जा रही है।"

"अंत में यही बोलूंगा कि अगर प्रियंका ने तुम्हें अभी भी देखकर अपना लेती है तो उसका हाथ कभी मत छोड़ना और अगर ऐसा होता है तो तुम्हारे घरवालें शायद समझ जाएंगे।

और सच बताना यह तुम्हारा यह अंध विश्वास ही तो था न कि बिल्ली जो रास्ता काटे तो उसे पार नहीं करना चाहिए, इसलिए तुमने इतनी जोर से ब्रेक दबाया की तुम्हारा ऐसा हाल हो गया"

यह कहकर अचानक सब गायब हो जाता है । और देबू बीच सड़क पर खड़ा होकर चिल्लाता है - "कहाँ हो तुम? कहाँ गए? यह दुकान कहाँ गई? मेरी माँ-दादा के बारे में तुम्हें कैसे पता? और बिल्ली के बारे में भी ?"

तभी देबू की आखें खुली और उसने अपने आप को अस्पताल में पाया। वह चिल्लाता हुआ घबराकर उठ खड़ा होता है हाथों में कई सुईयां चुबा हुआ देख उसे समझ नहीं आता क्या हुआ?" सब डॉक्टर और नर्स उसके चारों ओर मंडरा रहे हैं, उसके पिताजी और उसकी माँ रोते हुए अंदर आते हैं।"

उसे शांत कर डॉक्टर जब उसे कहता है कि स्ट्रीट लैंप से गाड़ी टकराने की वजह से और सीट बेल्ट के न पहनने की वजह से उसका एक्सीडेंट हो गया। इतने तेजी से टकराने के कारण उसको कई जगह चोट लगी है पर इसमें सबसे ज्यादा नुकसान उसके जबड़े का हुआ, जो टूट गया है । उसका मुंह फ़िलहाल इस वजह से ज़रा टेढा हो गया है।

यह सुनकर वह पुनः बेहोश हो गया।

जब उसे होश आया तो सामने माँ-बाप और प्रियंका थी। प्रियंका का परिवार बाहर था ।

थोड़ा बोल पा रहा था परंतु शायद अब बोलने की ज़रूरत न थी। दोनों परिवारों को साथ में देखकर उसे बातें अपने आप ही समझ में आ गई।

यह निर्णय अब पाठकों पर छोड़ा जा रहा है कि क्या इस कहानी के मुख्य पात्र, बिल्ली का रास्ता काटना सच में अशुभ था?

जीवन क्या है ?

जीवन क्या है ? एक सफर है, सुबह-शाम और दोपहर है ।।
बचपन है वह सुबह समान, जहां डेरा अपना खुला आसमान
न कोई टेंशन, न कोई चिंता, खेल खिलौनों के साथ ये बीता
स्वच्छंद सुहानी ये डगर है किसी चीज की नहीं फिकर है ।।
जीवन क्या है ? एक सफर है ।
सुबह शाम और दोपहर है ।।

अगला पड़ाव है दोपहर समान, जहां कुछ भी नहीं रहा आसान
लक्ष्य अनेक और ढ़ेरों सपने, छूटा बचपन और छूटे अपने
जाना इस शहर से उस शहर है, छांव कभी तो कभी धूप का कहर है
जीवन क्या है ? एक सफर है ।
सुबह शाम और दोपहर है ।।

अंतिम सफर है शाम समान,
जहां नहीं रहा कुछ करने को काम
समय काटना हुआ कठिन, सब कुछ है,
पर आती नहीं नींद
लाठी के सहारे खड़ी कमर है,
यही बुढ़ापे की उम्र है
जीवन क्या है ? एक सफर है ।
सुबह शाम और दोपहर है ।।

गणेश कुमार
प्रबंधक
अस्ति वसूली विभाग
हुबली-धारवाड़ अंचल

जीवन का अर्थ

यह पल बीतता जाता है,
यह आज नहीं फिर आता है।

यह जीवन चलता जाता है,
खुशियों के मेले लाता है।
दु:ख के आयामों को लेकर
क्षण भर को यह हमें रुलाता है।
यह पल बीतता जाता है,
यह आज नहीं फिर आता है।

काहे को हम करें रुसवाई,
जब ईश्वर की संतान हैं हम,
जब प्रेम भाव से जिएं,
तब ही सच्चे इंसान हैं हम।

मानव सेवा ही धर्म यहाँ,
इससे बड़ी क्या सेवा है
बस कर्म हमारे वश में है,
उसी से मिलती फल-मेवा है
जो जीते हैं बस अपनों में,

उनका कहाँ कोई नाम यहाँ,
हम कहां भूलते कभी उन्हें,
जिसने भी दिया बलिदान यहाँ।

करें हम अपना जन्म सफल,
इस धरा पर कुछ ऐसा कर जाएँ,
जनसेवा के पथ पर
हम नाम अमर करवा जाएँ।

आनंद कुमार झा
लिपिक
मौलाली शाखा
कोलकाता अंचल

जो छोड़ गया वो कोई और नहीं, मेरा पिता था !

मेरी दुनिया में भी था एक सूरज हुआ करता,
जो मेरी जिंदगी को अपनी परछाई से भी रौशन करता रहा !
रक्त का कतरा कतरा भरा जिसने मेरे अंदर,
छोड़ गया जो इस दुनिया में अकेला मुझे, वो कोई और नहीं मेरा पिता था !!

मेरी मां ने मुझे अपनी कोख में रख कर जन्म दिया,
पर वो अपने पसीने से मुझे सींचता रहा !
जननी ने तो भर दिया सीने में मेरे ममता का समंदर,
पर बाजुओं में ताकत भरी जिसने, वो कोई और नहीं मेरा पिता था !!

हर सुबह सिरहाने बैठ मेरे माथे को सहलाता,
बेफिक्र होकर मैं गहरी नींद में सोता रहा !
कई रातें जागी होंगी उसने मेरी खातिर, अपने सपने को अधूरा कर,
जो मेरे सपने बुनता रहा, वो कोई और नहीं मेरा पिता था !!

पुराने कपड़ों की दुकान से जो खुद पुराने कपड़े खरीदता,
चंद पैसे कमा कर हर त्योहार में, मेरे लिए नए कपड़े खरीदता रहा !
तीन पहर काम कर, एक वक्त का निवाला बचाकर,
भरे पेट में भी जो दो निवाला और खिलाता, वो कोई और नहीं मेरा पिता था !!

किताबों से भरे अपने बस्ते को मैं, इस जहाँ में सबसे भारी समझता,
पर वो घर के सारे बोझ को, अकेले अपने कंधों पर उठाता रहा !
मेले में जब टहलते हुए मेरे पैर थक जाते, फिर वो अपने कंधे पर बिठा कर,
पूरे जहान की सैर कराने वाला, वो कोई और नहीं मेरा पिता था !!

उसके रूवाब की आड़ में घर से बाहर मैं किसी को भी ललकार आता,
संघर्ष की आंधियों में, दुधारी तलवार बन मेरे साथ चलता रहा !
मैंने तो पूरा शहर देखा था उसके कंधे पर बैठकर,
मेरे कंधे पर बैठ इस दुनिया को अलविदा कहने वाला, वो कोई और नहीं मेरा पिता था !!

आपकी याद आते ही दिल बहुत बैठ सा है जाता,
वक्त की बीती परछाई के साथ अब जीवन बीत रहा !
जिसकी ऊँगली पकड़कर चलना सीखा मैंने, एक दिन मेरा हाथ छोड़ कर,
मेरी जिंदगी को वीरान कर गया, वो कोई और नहीं मेरा पिता था !!

मेरी जिंदगी में भी था एक सूरज हुआ करता,
जिंदगी के आखिरी पलों में भी, वो मेरे बारे में ही सोचता रहा !
रौशन थी जिसकी परछाई से जिंदगी मेरी,
डूब गया हमेशा के लिए जो सूरज, वो कोई और नहीं मेरा पिता था !!

छोड़ गया इस दुनिया में जो अकेला मुझे,
वो कोई और नहीं मेरा पिता था !
छोड़ गया इस दुनिया में जो अकेला मुझे,
वो कोई और नहीं मेरा पिता था !!

अमित चंद्रवंशी
लिपिक
मनईटांड़ शाखा
धनबाद अंचल

यादें

उन लम्हों को फिर जीने का, फिर मरने का मन करता है।
वो लम्हें जो कब के टूट गए, थोड़े थे जो बचे वो भी अब छूट गए,
कब भोर हुई, कब सांझ ढली, कब धूप हुई और कब दिन चढ़ा
सूखे-नंगे पावों से, आसमान की छांवों में,
इन ऊंची शहरी बस्ती से, उन छोटे से भी गावों में
धरती की बंजर भूमि पर, अब रोने का मन करता है
उन लम्हों को फिर जीने का, फिर मरने का मन करता है।

नए शाख खिले, नव निर्माण हुए,
खिली बाग में कलियाँ, कही चमन-ए-बहार हुए,
कहीं धरा नहाई सोने से तो कहीं कत्ले-ए-आम हुआ
हम भटके भी तो रातों में, गलियों में चौबारों में
हरी शाख जली, निर्माण ढहा, धरती भी अब चित्कार उठी
इन अंधे-गूंगों की बस्ती में मानवता अब कराह उठी
अब सुखी जलती शाखों में खुद जलने का मन करता है,
उन लम्हों को फिर जीने का, फिर मरने का मन करता है।

हर नयनों में, किलकारों में और आसमान के तारों में
छोटे-छोटे सपनों में, खंडित होते मकानों में,
कहीं फसल मुस्कुराती खेतों में, कोई सोता है शमशानों में
चमकती रंग-बिरंगी चौपालों में, दबा है कोई संगमरमर की
चट्टानों में

वों पत्थर भी अब चीख रहा, जिसको फेंका था दीवानों ने
राम भी रोए, लुट गयी बाबरी, हमारे ही तो ज़माने में
अस्मत लूटी चट्टानों में, सर पटकने का मन करता है,
उन लम्हों को फिर जीने का, फिर मरने का मन करता है।
किन लम्हों की मैं बात करूँ और किससे कब तक
फरियाद करूँ?
47 से यहाँ आग लगी है, इन जख्मों का क्या इलाज
करूँ?
नहीं है आज "आजाद" और "दिनकर" जो कलम को
शोला बना देंगे
50 करोड़ आज के युवा, गर्दिश में भी सिर झुका लेंगे
लुट गयी मेरी सोने की चिड़ियाँ, आतंक से मची बदहाली है,
रोज शहीद हो रहे देश के जवान, खून से सनी होली
दिवाली है।
धनी है निशा फिर भी सवेरा प्रखर का इंतजार करता है,
उन लम्हों को फिर जीने का, फिर मरने का मन करता है।

सुदीप कुमार विश्वास
चकदाह शाखा
बारासात अंचल

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा दिनांक 12.09.2023 को ठाणे मुख्य शाखा, नवी मुंबई अंचल का सफल निरीक्षण किया गया

बैंक ऑफ इंडिया परिवार के संग 25 वर्षों की रिश्तों की जमापूंजी

प्रकाश कुमार सिन्हा
मुख्य महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 09.07.1990

अभिजीत बोस
मुख्य महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 30.03.1992

अशोक कुमार पाठक
मुख्य महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 29.05.1992

सुधीरंजन पाढ़ी
मुख्य महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 29.05.1990

प्रफुल्ल कुमार गिरि
मुख्य महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 09.04.1992

पी. हरीकिशन
मुख्य महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 02.01.1995

शारदा भूषण राय
मुख्य महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 14.05.1990

नितिन देशपांडे
मुख्य महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 01.07.1992

राजेश कुमार राम
महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 02.05.1990

धर्मवीर सिंह शेखावत
महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 25.09.1987

लोकेश कृष्ण
महाप्रबंधक
एनबीजी एमपी एवं
छत्तीसगढ़
का.ग्र.ति: 11.05.1992

कुलदीप जिंदल
महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 07.05.1990

बिक्रम केशरी मिश्र
महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 02.07.1990

प्रशांत थपलियाल
महाप्रबंधक
एनबीजी नई दिल्ली
का.ग्र.ति: 04.07.1992

उद्दालक भट्टाचार्य
महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 14.05.1992

प्रमोद कुमार द्विवेदी
महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 02.01.1995

अमिताभ बनर्जी
महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 31.03.1992

राजेश सदाशिव इंगले
महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 02.01.1995

राधाकांत होता
महाप्रबंधक
एनबीजी पुणे
का.ग्र.ति: 28.03.1992

अश्वनी गुप्ता
महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 01.03.1984

गीता नागराजन
महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 02.05.1985

शशिधरन मंगलमकत
महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 24.03.1992

विलास रामदासजी पराते
महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 26.05.1990

बिस्वजीत मिश्रा
महाप्रबंधक
एनबीजी यूपी, लखनऊ
का.ग्र.ति: 30.03.1992

विवेकानंद दुबे
महाप्रबंधक
एनबीजी दक्षिण-II
का.ग्र.ति: 28.06.1990

संजय राम श्रीवास्तव
महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 02.03.1989

मनोज कुमार सिंह
महाप्रबंधक
एनबीजी पूर्व
का.ग्र.ति: 18.04.1994

वासु देव
महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 15.07.1989

सुब्रत कुमार रॉय
महाप्रबंधक
एनबीजी पश्चिम-I
का.ग्र.ति: 10.04.1992

संजीब सरकार
महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 25.03.1992

पुष्पा चौधरी
महाप्रबंधक
एनबीजी बिहार
का.ग्र.ति: 06.06.1990

धनंजय कुमार
महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 21.05.1992

नकुल बेहेरा
महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 18.06.1992

अनिल कुमार वर्मा
महाप्रबंधक
एनबीजी चंडीगढ़
का.ग्र.ति: 02.01.1995

मनोज कुमार
महाप्रबंधक
एनबीजी झारखंड
का.ग्र.ति: 02.01.1995

सुवेन्दु कुमार बेहेरा
महाप्रबंधक
एनबीजी गुजरात
का.ग्र.ति: 26.09.1990

मुकेश शर्मा
महाप्रबंधक
एनबीजी दक्षिण-I
का.ग्र.ति: 24.02.1997

प्रशांत कुमार सिंह
महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 23.05.1994

विकास कृष्ण
महाप्रबंधक
एनबीजी ओडिशा
का.ग्र.ति: 02.01.1995

शम्पा सुधीर विश्वास
महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 16.04.1992

सौंदर्ज्या भूषण साहनी
महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 24.02.1997

गुवाहाटी अंचल में हिन्दी संगोष्ठी

दिनांक 05 अगस्त 2023 को आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी अंचल में "पूर्वोत्तर भारत में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में मीडिया की भूमिका" विषय पर हिन्दी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी हेतु वक्ता के तौर पर "दैनिक पूर्वोदय" (हिन्दी दैनिक) के संपादक श्री रविशंकर रवि तथा "प्रातः समाचार"(हिन्दी दैनिक) के उप-संपादक श्री राजीव कुमार को आमंत्रित किया गया था।

बैंक ऑफ़ इंडिया के संयोजन में कार्यरत विभिन्न नराकासों की छमाही बैठकों का आयोजन - सितंबर 2023 तिमाही

मुज़फ्फ़रपुर नराकास

हरदोई नराकास

कन्नौज नराकास

फर्रुखाबाद नराकास

बडवानी नराकास

न्यूयॉर्क शाखा द्वारा हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित गतिविधियां

राजभाषा सम्मान पुरस्कार 2022-23

दिनांक 14 व 15 सितंबर 2023 को पुणे, महाराष्ट्र में माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हिन्दी दिवस समारोह एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा हमारे रत्नागिरी अंचल के संयोजन में कार्यरत नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय) को वर्ष 2022-23 हेतु 'नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति" श्रेणी में 'ख" क्षेत्र में राजभाषा सम्मान पुरस्कार (द्वितीय) प्रदान किया गया। इस अवसर पर केरल के माननीय राज्यपाल श्री आरिफ़ मोहम्मद खान जी से राजभाषा शील्ड प्राप्त करते हुए समिति अध्यक्ष एवं आंचलिक प्रबंधक श्री संतोष सावंत देसाई एवं माननीय केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा जी से प्रमाण-पत्र ग्रहण करते हुए समिति के सदस्य सचिव एवं वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) श्री रमेश गायकवाड।

अंचलों को प्राप्त नराकास पुरस्कार वर्ष 2022-23

इंदौर अंचल (प्रथम पुरस्कार)

भोपाल अंचल (प्रथम पुरस्कार)

वडोदरा अंचल (प्रथम पुरस्कार)

वास्को द गामा शाखा, गोवा अंचल (प्रथम पुरस्कार)

सूरत अंचल (प्रथम पुरस्कार)

कर्नूल शाखा, विजयवाडा अंचल (द्वितीय पुरस्कार)

चंडीगढ़ अंचल (द्वितीय पुरस्कार)

विजयवाड़ा अंचल (द्वितीय पुरस्कार)

जमशेदपुर अंचल (तृतीय पुरस्कार)

मदुरै अंचल (तृतीय पुरस्कार)

रांची अंचल (तृतीय पुरस्कार)

नाशिक अंचल (प्रोत्साहन पुरस्कार)

हिंदी माह 2022

अमृतसर

अहमदाबाद

आगरा

इंदौर

एरणाकुलम

कानपुर

जमशेदपुर

देहरादून

नई दिल्ली

केंदुझर

कोलकाता

कोल्हापुर

खंडवा

गांधीनगर

गाज़ियाबाद

गुवाहटी

गोवा

चंडीगढ़

चेन्नई

जबलपुर

जयपुर

जोधपुर

तिरुअनंतपुरम

तेलंगाना

दिल्ली एनसीआर

धनबाद

नवी मुंबई

नागपुर

नासिक

पटना

बर्धमान

बारासात

बारिपदा

बेंगलुरु

बोकारो

भागलपुर

भुवनेश्वर

भोपाल

मदुरै

मुंबई दक्षिण

मुबई उत्तर

मुजफ्फरपुर

रत्नागिरी

राँची

राजकोट

रायगढ़

रायपुर

लखनऊ

लुधियाना

वड़ोदरा

वाराणसी

विजयवाड़ा

विदर्भ

सिलिगुड़ी

सूरत

सोलापुर

हजारीबाग

हरदोई

हावड़ा

हुब्बली धारवाड़

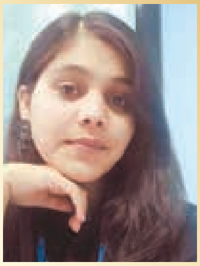

भावना
अधिकारी
शहीद नगर शाखा
आगरा अंचल